मार्च 2024

दादावाणी

Retail Price ₹ 20

शुक्लध्यान के चार स्तंभ हैं।
'मैं शुद्धात्मा हूँ' ऐसा लक्ष बैठ गया लेकिन
अस्पष्ट वेदन वह पहला स्तंभ है।
फिर दूसरा स्तंभ स्पष्ट वेदन का है।
बाहर का सभी ज्ञान से छूटता है
तब स्पष्ट वेदन होता है।
तीसरे स्तंभ में केवलज्ञान,
जो लोक-अलोक सभी कुछ दिखाता है
और चौथा स्तंभ, मोक्ष।

अडालज : ज्ञानी पुरुष दादाश्री की पुण्यतिथि : ता. 2 जनवरी 2024

अडालज : सत्संग-ज्ञानविधि : ता. 6-7 जनवरी 2024

मुंबई : सत्संग-ज्ञानविधि : ता. 12 से 14 जनवरी 2024

वर्ष : 19 अंक : 5
अखंड क्रमांक : 221
मार्च 2024
पृष्ठ - 28

Editor : Dimple Mehta
© 2024
Dada Bhagwan Foundation
All Rights Reserved.
Printed & Published by
Dimple Mehta on behalf of
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj,
Dist.-Gandhinagar - 382421

Owned by
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj,
Dist.-Gandhinagar - 382421

Printed at
Amba Multiprint
Opp. H B Kapadiya New High School, At-Chhatral, Tal: Kalol, Dist. Gandhinagar - 382729

Published at
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj,
Dist.-Gandhinagar - 382421

संपर्क सूत्र :
त्रिमंदिर, सीमंधर सिटी,
अहमदावाद-कलोल हाइ-वे,
पो.ओ.: **अडालज**,
जि.: गांधीनगर-382421.
फोन : 9328661166-77
email: dadavani@dadabhagwan.org
www.dadabhagwan.org
दादावाणी संबंधी शिकायत के लिए:
+91 8155007500

सबस्क्रिप्शन (सदस्यता शुल्क)
5 साल
भारत : 1000 रुपये
वार्षिक
भारत : 200 रुपये
भारत में D.D./M.O.
'महाविदेह फाउन्डेशन' के नाम से संपर्कसूत्र के पते पर भेजें।

दादावाणी

शुद्धात्मा पद से केवलज्ञान स्वरूप का पुरुषार्थ

संपादकीय

इस जगत् की वास्तविकता क्या है, उस हकीकत का वर्णन तीर्थंकर भगवंतों ने केवलज्ञान में देखकर कहा है। यह जगत् मूल स्वरूप में छः सनातन तत्त्वों से बना हुआ है, उनमें से एक तत्त्व है 'आत्मतत्त्व', वही खुद है और वही रियलाइज करना है। आत्मा, जो खुद का स्वरूप है, उस अविनाशी वस्तु को कैसे समझें, पहचाने? उसका अनुभव कैसे करें? उसकी पहचान तो कोई अनुभवी ज्ञानी पुरुष हों वे ही करवा सकते हैं।

ज्ञान के बाद महात्माओं को भीतर किसका ध्यान रहता है? 'मैं चंदूभाई हूँ' यह या मैं शुद्धात्मा हूँ यह? ज्यादतर सभी को 'मैं शुद्धात्मा हूँ' वही रहता है। भूलना चाहे फिर भी भूल नहीं पाते उसे! उसे 'शुक्लध्यान' कहा है। शुक्लध्यान के चार स्तंभ हैं : पहला स्तंभ अस्पष्टवेदन, जो अक्रम के महात्माओं को रहता है। 'मैं शुद्धात्मा हूँ', उसका *लक्ष* बैठ गया है लेकिन वह अस्पष्ट वेदन है। दूसरा स्तंभ परम पूज्य दादाश्री स्वयं जिसमें रहते थे, जो स्पष्ट वेदन का है। तीसरे स्तंभ में केवलज्ञान और चौथा स्तंभ मोक्ष हैं।

शुद्धात्मा का *लक्ष* बैठा, वह तो वस्तु स्वरूप का सबसे पहला 'उपनगर' है। फिर ऐसे कितने ही 'उपनगर' आते हैं। जैसे-जैसे अनुभव बढ़ते जाते हैं न, वैसे-वैसे आगे के 'उपनगर' आते जाते हैं, स्टेशन बदलते रहते हैं। दादाश्री हमेशा कहते थे कि यह शुद्धात्मा का पद, आपको इस पहले स्टेशन पर हमने उतार दिया है। मोक्ष की बाउन्ड्री में शुद्धात्मा वह पहला स्टेशन है, वहाँ से सेन्ट्रल स्टेशन की ओर जाएँगे, तब केवलज्ञान का अंतिम स्टेशन आएगा।

महात्माओं को वह आगे की श्रेणियाँ चढ़ने के लिए दादा भगवान की पाँच आज्ञा की आराधना अंतिम ध्येय प्राप्त करवाएगी ही। दादा भगवान की कृपा से शुद्धात्मा पद को पाकर, वह अस्पष्टवेदन प्राप्त हुआ है। अब, इस जन्म में आत्म पुरुषार्थ से आत्मा के स्पष्टवेदन तक पहुँचना है। जब खुद को आत्मा का स्पष्टवेदन होगा तब खुद का स्वरूप दिखाई देगा, जो कि निरालंब है, केवलज्ञान स्वरूप है। वह खुद का केवलज्ञान स्वरूप दिखाई देना, उसे जानना और अनुभव करना, वह इस जन्म का अंतिम ध्येय है।

हम सभी इस ध्येय को पूरा करने के लिए रोज़ पाँच आज्ञा में अवश्य रहेंगे, फाइल नंबर-1 के कषाय रूपी दोषों की गाँठों का *निकाल* करें, शुद्ध उपयोग में रहकर प्रकृति को अलग देखें, 'मैं कर रहा हूँ, तू कर रहा है, वे कर रहे हैं', उसमें कोई कर्ता न दिखाई दे, कोई दोषित न दिखाई दे, हर एक में शुद्धात्मा दिखाई दे। आज्ञा 70 प्रतिशत सिद्ध हो जाए, उस पुरुषार्थ में ही रहें। अब, जैसे-जैसे फाइलों का *निकाल* होगा वैसे-वैसे ज्ञाता-द्रष्टापन बढ़ेगा। उसके बाद आगे केवलज्ञान स्वरूप दिखाई दे, अनुभव में आए, यही अभ्यर्थना।

- जय सच्चिदानंद

शुद्धात्मा पद से केवलज्ञान स्वरूप का पुरुषार्थ

'दादावाणी' सामायिक में मुद्रित पाठ्य सामग्री मूलत: गुजराती 'दादावाणी' का हिन्दी रूपांतर है। कोष्ठक में दिए गए शब्द या तो अंग्रेज़ी शब्द का अर्थ हैं अथवा शब्द का तात्पर्य स्पष्ट करने हेतु वृद्धित किए गए वाक्यांश है। यहाँ पर 'आत्मा' शब्द को गुजराती और संस्कृत की तरह पुल्लिंग में प्रयोग किया गया है। जहाँ पर भी 'चंदूभाई' नाम का प्रयोग हुआ है, वहाँ पर पाठक खुद को समझें। 'दादावाणी' के इस अंक में अगर आप कोई बात न समझ पाएँ तो प्रत्यक्ष सत्संग में पधारकर समाधान प्राप्त करें। अनुवाद में कोई कमी नज़र आए तो हमें सूचित करने की कृपा करें, ताकि भविष्य में सुधार किया जा सकें। ऐसी क्षतियों के लिए हम आपके क्षमाप्रार्थी है।

निश्चय : ध्येय : नियाणां

प्रश्नकर्ता : ध्येय और निश्चय, इन दोनों के बीच कोई संबंध है क्या?

दादाश्री : निश्चय तो छोटा कहलाता है। ध्येय तो अलग चीज़ है। निश्चय तो, अलग-अलग करने पड़ते हैं। ध्येय तो एक ही, आत्मा प्राप्त करने का और मोक्ष में जाने का, जो कहो वह, एक ही शब्द, ध्येय। निश्चय तो तरह-तरह के होते हैं।

प्रश्नकर्ता : निश्चय सारे व्यवहारिक भी होते हैं?

दादाश्री : उस निश्चय को निश्चय नहीं माना जाता।

प्रश्नकर्ता : यह जो *नियाणां* कहते हैं, मोक्ष का *नियाणां*?

दादाश्री : *नियाणां* अर्थात् अभी तक जो कुछ भी किया हो आपने, आत्मा के लिए तप-जप वगैरह जो भी किया हो, आपने वह किया इसलिए आपके पास वह पूंजी है, जिसमें उसका उपयोग करना हो उसमें उपयोग करने की छूट होती है आपको। अत: यदि कहो कि, 'अमरीका खत्म हो जाए', ऐसा *नियाणां* करें न, तो फिर आपकी सारी पूंजी वहाँ पर खर्च हो जाएगी।

प्रश्नकर्ता : अर्थात् संसार हेतु में खर्च हो जाता है, *नियाणां*।

दादाश्री : हाँ, खुद ऐसा अहंकार करता है तो खर्च हो जाता है। 'ऐसा कर दूँगा', उसमें खर्च हो जाता है फिर।

प्रश्नकर्ता : तीन शब्द हैं, मोक्ष का *नियाणां*, शुद्धात्मा का निश्चय और कल्याण की भावना, तो इन तीनों के बीच क्या संबंध है?

दादाश्री : *नियाणां* मोक्ष का करना है, वर्ना किसी के साथ स्पर्धा हो जाएगी। मोक्ष के अलावा और कुछ भी नहीं चाहिए, ऐसा *नियाणां* होना चाहिए। इसलिए फिर अपनी सारी कमाई उसी में खर्च होगी।

'मैं शुद्धात्मा हूँ', वह निश्चय डिगना नहीं चाहिए। वह जो निर्णय हुआ है, वह निर्णय नहीं बदलना चाहिए।

प्रश्नकर्ता : और जगत् कल्याण की भावना ऐसे।

दादाश्री : बस, जैसे अपना कल्याण हुआ है वैसा ही लोगों का हो।

प्रश्नकर्ता : महात्माओं को शुद्धात्मा का ध्येय प्राप्त हुआ है, मोक्ष का ध्येय, तो यदि वे ध्येय में से चलित हो जाएँ और फिर से ध्येय में स्थिर होना हो तो ऐसा किस प्रकार से हो सकता है?

दादाश्री : जो चलित हो जाए, उसे ध्येय नहीं कहा जाएगा। ध्येय अर्थात् यही मेरा सबकुछ है, मेरा सर्वस्व।

प्रश्नकर्ता : अत: पहले ध्येय मज़बूत करने

की ज़रूरत है। तो वह किस प्रकार से मज़बूत हो सकता है?

दादाश्री : ध्याता, ध्येय का ध्यान करके ध्येय स्वरूप हो जाता है।

प्रश्नकर्ता : उसमें ध्याता कौन है?

दादाश्री : खुद।

प्रश्नकर्ता : और ध्येय?

दादाश्री : आत्मस्वरूप।

प्रश्नकर्ता : ध्येय स्वरूप होने के लिए किस प्रकार से ध्यान करना चाहिए?

दादाश्री : ये आज्ञाएँ दी हैं। 'मैं शुद्धात्मा हूँ', ऐसा ध्यान रहना चाहिए।

शुद्धात्मा का ध्यान वही शुक्लध्यान

प्रश्नकर्ता : शुद्धात्मा का ध्यान किस तरह से करना है?

दादाश्री : अब आपको ध्यान करने को कुछ रहा ही नहीं। ध्यान कब करना होता है कि जब ध्येय की प्राप्ति करनी हो तब। ध्येय तय करता है, खुद ध्याता बनता है और फिर ध्यान करने से ध्येय और ध्याता का संयोजन होता है।

हर एक व्यक्ति अपना ध्येय तय कर ले न, कि, 'मुझे स्वरूप प्राप्त करना है', तो आपका स्वरूप शुद्धात्मा है और आप चंदूभाई हो इसलिए आप ध्याता हुए और शुद्धात्मा ध्येय है और जब इन दोनों का संयोजन होता है तब वह ध्यान कहलाता है। वे दोनों जब एक हो जाते हैं तो उस एकता को ध्यान कहते हैं। अब उस ध्यान से खुद शुद्धात्मा हो जाता है। अब, वह क्रमिक मार्ग का रास्ता है। ध्याता, ध्येय और ध्यान का! जबकि इस अक्रम मार्ग में तो आप खुद ही ध्येय स्वरूप हो गए हो न! खुद को शुद्धात्मा का *लक्ष* प्राप्त हो गया है कि 'मैं शुद्धात्मा हूँ' इसलिए फिर उसे कोई ध्यान करना बाकी नहीं रहा अब!

शुक्लध्यान तो इस काल में क्रमिक मार्ग से उत्पन्न हो सके ऐसा है ही नहीं। यह तो, यह ज्ञान देते हैं न, उससे (शुक्लध्यान) उत्पन्न हो जाता है। शुक्लध्यान और आत्मध्यान को एक ही माना जाता है। अब यह तो कम्प्लीट आत्मा का ध्यान हो गया, उसी को कहते हैं शुक्लध्यान।

शुक्लध्यान : प्रत्यक्ष मोक्ष का कारण

प्रश्नकर्ता : शुक्लध्यान अर्थात् क्या?

दादाश्री : शुक्लध्यान अर्थात् 'मैं शुद्धात्मा हूँ', ऐसा निरंतर ध्यान रहे, वह। वह टुकड़ों में नहीं होना चाहिए, निरंतर होना चाहिए। शुक्लध्यान यानी शाश्वत वस्तु का ध्यान उत्पन्न होना वह और धर्मध्यान वह अवस्था का, अशाश्वत वस्तु का ध्यान उत्पन्न होना, वह है।

शुक्लध्यान का अर्थ क्या है, कि खुद के निज स्वरूप का ही भान रहना और जानना। सामने वाले में शुद्धात्मा देखना। वह चोरी कर रहा हो तब भी हम उसके आत्मा को शुद्ध ही देखें। चाहे कुछ भी करे, वह सब व्यवस्थित के ताबे में है लेकिन यह आत्मा का कार्य नहीं है। अतः हम शुद्ध ही देखते हैं। शुद्ध देखना और शुद्ध का कुछ अनुभव होना, वही शुक्लध्यान है।

शुक्लध्यान अर्थात् जगत् को जैसा है वैसा देखना और जिसे समभाव से *निकाल* करना है, उसे शुक्लध्यान बहुत अच्छे प्रकार से रहता है। शुक्लध्यान अर्थात् खुद के स्वरूप की रमणता के अलावा अन्य कोई भी ध्यान नहीं, खुद अपने ध्यान में रहे, वह शुक्लध्यान है। खुद का स्वरूप खुद के ध्यान में रहे, वह शुक्लध्यान है और शुक्लध्यान प्रत्यक्ष मोक्ष का कारण है।

'मैं शुद्धात्मा हूँ', निरंतर उसका *लक्ष* रहता है?

प्रश्नकर्ता : निरंतर रहता है, दादा।

दादाश्री : वह आत्मध्यान कहलाता है, वह शुक्लध्यान कहलाता है। बोलो, शुक्लध्यान प्रत्यक्ष मोक्ष का कारण है, वर्ना एक क्षण भर भी आत्मा याद नहीं रह सकता। एक अनजान व्यक्ति था न, वह शुद्धात्मा जानकर आया। उसके बाद अगले दिन, वह मन में याद करने लगा कि वह शब्द क्या था, वह शब्द क्या था? पंद्रह मिनट तक याद नहीं आया। यह याददाश्त की बात नहीं है। यह तो साक्षात्कार है और अभेदता है।

शुक्लध्यान : पहला स्तंभ अस्पष्ट वेदन

शुक्लध्यान के चार स्तंभ हैं; उनमें से यह पहला स्तंभ है। यह शुद्धात्मा का *लक्ष,* उसे शुक्लध्यान कहा जाता है। शुक्लध्यान अर्थात् आत्मा का वेदन हो जाता है। यानी कि अस्पष्ट वेदन होता है। वस्तु है, ऐसा पक्का हो गया है। वस्तु है, ऐसा भान हो गया है आपको, लेकिन उसका स्पष्ट वेदन नहीं हुआ है। 'शुद्धात्मा हूँ', ऐसा *लक्ष* बैठ गया है लेकिन अस्पष्ट वेदन वह पहला स्तंभ है, दूसरा स्तंभ है स्पष्ट वेदन।

प्रश्नकर्ता : क्या निरंतर *लक्ष* उसी में रह सकता है?

दादाश्री : नहीं, *लक्ष* नहीं रखना है। स्पष्ट वेदन कब होता है? बाहर दर्शन में आपको सबकुछ आ गया है लेकिन रूपक में नहीं आया है और जब रूपक में आ जाता है तब स्पष्ट वेदन होता है। कुछ भाग रूपक में आ गया है लेकिन व्यापार और रोज़गार... बाकी सब में से 'समझ' से छूट गए हो लेकिन 'ज्ञान' (अनुभव) से नहीं छूटे हो। जब 'ज्ञान' से छूट जाओगे तब स्पष्ट वेदन होगा। स्पष्ट वेदन होना, वह दूसरा स्तंभ है। उसके बाद तीसरा स्तंभ है, केवलज्ञान, वह सभी कुछ दिखाता है।

प्रश्नकर्ता : लोक-अलोक।

दादाश्री : लोक-अलोक। अभी लोक-अलोक हमें समझ में तो आता है लेकिन रूपक में नहीं आता। यानी कि केवलदर्शन में तो है।

अभी यह पहला स्तंभ आ गया, बहुत हो गया। फिर आपको और काम ही क्या है? जैन तो क्या कहते हैं कि, 'पहला स्तंभ, ओहोहो! यह तो भगवान हो गया!' बारहवें गुणस्थानक के बिना पहला स्तंभ नहीं आ सकता। दसवें गुणस्थानक तक तो कभी भी पहले स्तंभ को छू भी नहीं सकते। वह पहला स्तंभ आपको प्राप्त हो गया है! ग्यारहवाँ गुणस्थानक है, वह गिरने का स्थान है।

दसवें गुणस्थानक तक लोभ रहता है, सूक्ष्म लोभ रहता है। जब तक वह लोभ नहीं टूटता, तब तक बारहवाँ गुणस्थानक नहीं आता। फिर चाहे वह लोभ किसी भी प्रकार से टूटे, क्रमिक से या अक्रम से। लेकिन जब लोभ टूटता है तब बारहवें गुणस्थानक तक पहुँचता है। जब तक लोभ है, तब तक अहंकार जाता नहीं है।

शास्त्रकारों ने मना किया है कि इस काल में शुक्लध्यान नहीं हो सकता। शुक्लध्यान अर्थात् जगत् को जैसा है वैसा देखना। पहले, 'मैं चंदूभाई हूँ' और 'स्थानकवासी हूँ' ऐसा सब ध्यान में रहता था। अब 'मैं शुद्धात्मा हूँ' ऐसा आपके ध्यान में रहता है। रहता है या नहीं रहता?

प्रश्नकर्ता : हाँ, रहता है।

दादाश्री : वह ध्यान शुद्धात्मा का ध्यान है, वही शुक्लध्यान है। अब शुक्लध्यान का पहला

स्तंभ तो किस आधार पर रखा है, अस्पष्ट? ज्ञान, दर्शन और चारित्र को भिन्नता से देखता है वह।

प्रश्नकर्ता : अभेदता से नहीं देखते।

दादाश्री : हाँ, अभेद प्रकार से नहीं देखते। आपका तो प्रतीति से अभेद हुआ है और निरंतर प्रतीति है यह। यानी कि क्षायक समकित है यह, केवल दर्शन है यह। निरंतर की प्रतीति हो गई है, तो अब खूब इसके पीछे पड़ना।

ध्येय रखें शुद्ध उपयोग का

प्रश्नकर्ता : निश्चय किया हो कि दादा के पास रहकर काम निकाल लेना है, पाँच आज्ञाओं में रहना है, फिर भी उसमें कमज़ोर पड़ जाए, तो उसके लिए क्या करना चाहिए?

दादाश्री : लो, क्या करना चाहिए मतलब? मन कहे कि 'ऐसा करो' तो आप समझ लो कि यह तो बल्कि हमारे ध्येय से बाहर है। दादाजी की कृपा कम हो जाएगी। इसलिए मन से कह देना कि, 'नहीं, यह ऐसे करना है, ध्येय के अनुसार।' दादाजी की कृपा कैसे उतरती है, ऐसा जान लेने के बाद आपको अपना आयोजन करना चाहिए।

तेरा ध्येय क्या बनने का है?

प्रश्नकर्ता : दादा जैसा बनना है।

दादाश्री : यह वापस कहाँ लाया? दादा जैसे होकर क्या करना है? शुद्ध होने का रख न! आप मोक्ष में जाने की बात करो। यों दादा जैसे होना है, ऐसा होना है ऐसा कोई भी भाव नहीं करना चाहिए। वह मारा जाएगा समझो, लटक जाएगा। अपने पास शुद्ध उपयोग और ये सभी साधन हैं और शुद्ध हो गए तो दादा से भी आगे बढ़ गए। दादा जैसे नहीं, दादा से भी आगे। आपको ऐसा होना है, ऐसा किसलिए? ऐसा हेतु नहीं रखना है, शुद्ध ही रहो।

प्रश्नकर्ता : फिर जो हो सो।

दादाश्री : फिर उसका जो भी फल आए, वह। बाकी, ऐसा होना है, वह भाव तो बंधनकर्ता है।

प्रश्नकर्ता : कोई ध्येय तय किया हो न, तो उस अनुसार ज़रा जल्दी चलते रहेंगे।

दादाश्री : यही ध्येय पक्का करना है, शुद्ध उपयोग। और शुद्ध ही हो आप। वर्ना, उसमें तो वह पोतापन रहा करेगा। आपका शुद्ध उपयोग पोतापन रहित कहा जाता है।

'मैं शुद्धात्मा हूँ', ऐसी दृष्टि रखना, वह है 'शुद्ध उपयोग'। सामने वाले में शुद्धात्मा देखना, वह है 'शुद्ध उपयोग'। सामने वाला कर्ता नहीं दिखाई दे, वह भी 'शुद्ध उपयोग' है! 'शुद्ध उपयोग' संपूर्ण चारित्र का कारण है, पूर्ण तक का चारित्र जिसमें भगवान थे!

पाँच आज्ञा से आता है शुद्ध उपयोग

प्रश्नकर्ता : अपने महात्मा जैसे-जैसे ज्ञान का उपयोग करते जाते हैं, वैसे-वैसे उनकी ज्ञान की अवस्था बढ़ती जाती है या फिर ज्ञान प्राप्ति के बाद उपयोग नहीं रखने पर भी आपकी कृपा से ज्ञान में पूर्णता आती ही है?

दादाश्री : उपयोग में ही रहना चाहिए। उपयोग संसार में रहे और अपना ज्ञान बढ़ता रहे, ऐसा नहीं हो सकता। संसार *निकाली* चीज़ है, *निकाली* चीज़ में उपयोग नहीं रहना चाहिए। जो कुछ भी हो, उसे देखते रहना है।

प्रश्नकर्ता : दादा, तो वास्तव में उपयोग कैसे रखना चाहिए, वह समझाइए।

दादाश्री : पाँच आज्ञा वह वास्तव में उपयोग ही है। सभी में आप शुद्धात्मा देखो, 'यह फाइल है', ऐसा देखोगे, तभी कहा जाएगा कि शुद्धात्मा देखा या फिर शुद्धात्मा देखोगे तब भी फाइल हो जाएगी। यानी कि ये पाँच आज्ञाएँ ही उपयोग है। इससे फिर अंदर ज्ञान का उपयोग और भी ज़्यादा बढ़ता जाएगा। वास्तविक उपयोग बढ़ता जाएगा। यह बाड़ है उपयोग में रहने के लिए। उपयोग रखे बिना ज्ञान कभी भी बढ़ ही नहीं सकता। उपयोग यानी अब तक उपयोग संसार में था, आत्मा संसार में बरतता था, जबकि वह आत्मा अब आत्मा में बरतता है, वही उपयोग है। आत्मा, आत्मा में कैसे बरतेगा? तब कहते हैं, बच्चा दूध गिरा रहा हो तो उसे देखते रहे। वहाँ जाकर रोकता ज़रूर है। तब आपको चंदूभाई से कहना है कि बेटे को रोको लेकिन कषाय मत करना, इमोशनल नहीं होना है।

खुद के शुद्धत्व में बदलाव नहीं

प्रश्नकर्ता : यहाँ सत्संग में बैठे हुए हों और हम सभी में शुद्धात्मा देखें तो क्या वह शुद्ध उपयोग कहा जाएगा?

दादाश्री : हाँ, उन सभी में शुद्धात्मा देखें लेकिन अगर कोई आकर थप्पड़ लगाए और उसमें शुद्धात्मा नहीं दिखाई दे तो आप समझना कि वह शुद्ध उपयोग नहीं है। पुलिस वाला जेल में ले जा रहा हो, उस समय पुलिस वाले का आत्मा शुद्ध ही दिखाई दे, तब ठीक है! बीवी जब गालियाँ सुना रही हो, उस समय बीवी का आत्मा शुद्ध ही दिखाई दे, तब सही है। ऐसा आत्मा आपको दिया है, आपको जानने की ज़रूरत है। मैंने कैसा आत्मा दिया है? निवल शुद्ध आत्मा दिया है। वह वापस कभी भी जैसा था, वैसा नहीं होगा। यानी आपकी तैयारी होनी चाहिए।

खुद शुद्धात्मा तो हो गए इसलिए अब आपको ऐसा मानना है कि, 'मैं शुद्ध ही हूँ'। कभी अगर चंदूभाई के पूर्वकर्म का ऐसा कोई उदय हो, जिससे संसार के लोगों को घृणा उत्पन्न हो। फिर भी आपका, अपना जो शुद्धत्व है, उसमें कोई बदलाव नहीं आना चाहिए। मैंने आपको शुद्ध स्वरूप दिया है। फिर उदयकर्म चाहे कैसे भी भरे पड़े हों, वे निकलते रहेंगे। यदि खुद से खराब कार्य हो जाए तब यदि आपको खुद के लिए ऐसा हो कि 'मैं बिगड़ गया हूँ या अशुद्ध हो गया हूँ' तो वह शुद्ध उपयोग नहीं कहा जाएगा। खुद से चाहे कैसा भी काम हो जाए लेकिन अब वह आपका काम नहीं है। अब तू जुदा हो गया और वह काम करने वाला जुदा। आप अशुद्ध नहीं हुए हो। साथ-साथ ऐसी जागृति रहनी चाहिए कि जो अशुद्ध है, वही अशुद्ध हुआ है।

अब यदि आप मुझसे ऐसी शिकायत करो कि कोई आपको गालियाँ दे रहा है तो मैं समझूँगा कि आप शुद्ध उपयोग में नहीं रहे। उसे शुद्ध ही देखो। वह भी शुद्ध ही है और यह जो दखल है, वह *पुद्गल* की कुश्ती है। कुश्ती कौन करता है? यह *पुद्गल* और खुद अपने सिर पर ले लेता है। और फिर कहेगा कि 'इसने मेरा अपमान किया'। तब मैं कहूँगा कि, 'तेरा शुद्ध उपयोग बेकार गया।' शुद्ध उपयोग कब माना जाएगा कि सभी में शुद्ध ही है, जब ऐसा देखा जाए।

शुद्धात्मा हो जाने से ही कहीं काम खत्म नहीं हो जाता। शुद्धात्मा किसे कहते हैं, कि सामने वाला गालियाँ दें और हमें यदि अशुद्धि हो जाए तो वह शुद्धात्मा नहीं कहलाता। उस समय उसका शुद्धात्मा दिखाई देना चाहिए। गाली दे रहा है, वह अपना उदयकर्म दे रहा है। वह बाजा बज रहा है, टेपरिकॉर्ड बज रहा है, लेकिन उदयकर्म तो अपना ही है न? और सामने वाला शुद्ध ही

है इसलिए खुद सामने वाले को शुद्ध देखता है। खुद को शुद्ध देखना, उसे कहते हैं शुद्ध उपयोग! जीवमात्र को शुद्ध देखना, वह शुद्ध उपयोग कहलाता है।

न देखे कर्ता किसी को, वहाँ ही शुद्ध उपयोग

प्रश्नकर्ता : गालियों को गालियों के स्वरूप में नहीं देखना, आप ऐसा कहना चाहते हैं क्या?

दादाश्री : कोई जब गाली देता है न, उस क्षण वह कर्ता नहीं है। उसे कर्ता देखोगे तो वह अशुभ उपयोग कहा जाएगा। जगत् में आप भी कर्ता नहीं हो और अन्य कोई भी कर्ता नहीं है। इसलिए अकर्ताभाव से देखोगे तो वही शुद्ध उपयोग कहा जाएगा। अत: हमारा हर मिनट ऐसा शुद्ध उपयोग रहता है। तुरंत ही, ऑन द मोमेन्ट! वर्ना फिर अशुभ हो जाएगा, तुरंत बिगड़ जाएगा। बाद में फिर खुद को ही सुधारना पड़ेगा न! शुद्ध उपयोग यानी कि 'खुद शुद्ध है, खुद कर्ता नहीं है किसी चीज़ का, खुद अक्रिय है'।

लेकिन अब दूसरों से क्या कहता है? 'आपने मेरे प्याले क्यों फोड़ दिए?' तब वह शुद्धता नहीं रही। वह खुद अपने आपको शुद्ध मानता है और शुद्ध बरतता भी है, लेकिन सामने वाले से ऐसा कहता है कि 'आपने मेरे प्याले फोड़ दिए' यानी उसे कर्ता मानता है, वह कमी है।

प्रश्नकर्ता : अर्थात् तब वह उपयोग में नहीं है।

दादाश्री : नहीं, उपयोग तो है लेकिन ऐसे उपयोग बिगड़ गया। शुद्ध उपयोग में नहीं है, वह अशुभ उपयोग हुआ। अत: किसी को कर्ता नहीं मानना है, तभी शुद्ध उपयोग रहेगा। हम अक्रिय और सामने वाले भी अक्रिय। जगत् में कोई भी कर्ता नहीं है। क्योंकि सभी शुद्ध आत्मा हैं। जब ऐसा अनुभव में आएगा, तब सर्वत्र शुद्ध उपयोग रहेगा।

'मैं कर रहा हूँ, वह कर रहा है और वे कर रहे हैं', जहाँ पर ऐसा भाव नहीं है, वहाँ शुद्ध उपयोग है, संपूर्ण। यह तो अगर ज़रा सा किसी ने गाड़ी के सामने लाल झंडी दिखाई तब, 'आप लाल झंडी क्यों दिखा रहे हो' तो फिर वहाँ पर कमज़ोर पड़ गए। क्योंकि वह दिखा ही नहीं रहा है! कोई भी कर्ता नहीं दिखाई देना चाहिए, तभी वह शुद्ध उपयोग कहा जाएगा।

इसीलिए महावीर भगवान ने कहा था न, कि, 'मैं कर रहा हूँ', 'वह कर रहा है' और 'वे कर रहे हैं', यह मेरे विज्ञान में नहीं है। किसी के लिए ऐसा मानो कि 'वह किसी भी चीज़ का कर्ता है', तो वह मेरे मोक्ष विज्ञान में नहीं है, अन्य विज्ञान में है।

ऑफिस जाने पर यदि आपका शुद्ध उपयोग नहीं रहेगा तो सभी क्लर्क, क्लर्क ही दिखाई देंगे और यदि शुद्ध उपयोग होगा तो क्लर्क भी दिखाई देंगे और शुद्धात्मा भी दिखाई देंगे। इस प्रकार हर एक बात में शुद्ध उपयोग ही रखना चाहिए। उपयोग नहीं चूकना है। शुद्ध उपयोग ही समता है और वही सबकुछ है। फिर उदयकर्म चाहे कैसा भी नाच करें, उसमें हर्ज नहीं है। उदयकर्म तो उदयकर्म कहलाता है। वह व्यवस्थित के अधीन है, हमारे अधीन नहीं है। हम तो सिर्फ उसके जानकार हैं कि इस प्रकार के उदयकर्म हैं।

शुद्धात्मा देखें, उस समय शुद्ध उपयोग

जो हमारी आज्ञा में रहा, वह शुद्ध उपयोग में रहा, ऐसा कहा जाएगा। जो भी फाइल आई, उसका समभाव से *निकाल* करना है। इस पर यदि कोई ध्यान नहीं दोगे तो उसे, 'समभाव से *निकाल*' नहीं हुआ कहा जाएगा और यदि ध्यान दोगे तो

वह शुद्ध उपयोग है। हमारे पाँच वाक्य शुद्ध उपयोग वाले ही हैं।

कभी भी यदि ऐसे परिणाम बदलें कि 'क्या होगा' तो सब बिगड़ेगा। कुछ नहीं होगा, कुछ होना ही नहीं है। यदि हमारा उपयोग शुद्ध है तो दुनिया में कोई भी नाम देने वाला नहीं है और शुद्ध उपयोग बिगड़ा तो सब चढ़ बैठेगा।

प्रश्नकर्ता : यों तो ऐसा कहा जाता है न, कि यदि दो घड़ी के लिए भी शुद्ध उपयोग रहे तो सर्वांश केवलज्ञान हो जाता है?

दादाश्री : नहीं होता। शुद्ध उपयोग, वह केवलज्ञान ही कहलाता है, लेकिन वह अंश केवलज्ञान कहलाता है। सर्वांश केवलज्ञान नहीं कहलाता। क्योंकि पचता नहीं है इस काल में। अक्रम है न!

इसीलिए मैं कहता हूँ न, कि एक गुणस्थानक, अड़तालीस मिनट तक लगातार सब के शुद्धात्मा देखते-देखते जाएँ तो वह शुद्ध उपयोग है। यानी एक ओर गधा दिखाई देता है और दूसरी ओर शुद्धात्मा दिखाई देता है, ऐसे देखते-देखते जाएँ तो उसे शुद्ध उपयोग कहा जाएगा। जब अन्य जीवों को आप शुद्धात्मा देखते हो तब आपका शुद्ध उपयोग रहता है।

जिनके, जैसा है वैसा, यथार्थ देखने के भाव हैं, जिनके भाव ज्ञानी पुरुष द्वारा दी गई दृष्टि से देखने के हैं, उन्हें शुद्ध उपयोग प्राप्त हो ही जाता है!

अब तो आपको मूल बात पर ही आ जाना है। आपने जो स्टैन्डर्ड जान लिया है, उस स्टैन्डर्ड की पुस्तकों की ज़रूरत नहीं रही न आपको? अब, आत्मा की हकीकत क्या है और आत्मा के तौर पर कैसे बरतना है, इतना ही देखना बाकी रहा।

जगत् निर्दोष दिखाई दे, वह शुद्ध उपयोग

'मैं शुद्धात्मा हूँ' उसका उपयोग रहना चाहिए। यह भी शुद्धात्मा है, वह भी शुद्धात्मा है। गधे, कुत्ते, बिल्ली सभी शुद्धात्मा हैं। जेब काटने वाला भी शुद्धात्मा है।

'शुद्ध उपयोग' अर्थात् 'मैं शुद्धात्मा हूँ और यह मैं नहीं कर रहा हूँ लेकिन अन्य कोई कर रहा है' ऐसा भान हो जाए, खुद शुद्ध में रहे और सामने वाले का शुद्धात्मा देखे, वह। कोई गालियाँ दे, जेब काट ले, फिर भी उसके शुद्धात्मा ही देखे, वह शुद्ध उपयोग! जगत् पूरा निर्दोष दिखता है उसमें। 'मैं शुद्धात्मा हूँ', जब से यह *लक्ष* (जागृति) बैठे, तब से ही शुद्ध उपयोग की शुरूआत होती है और संपूर्ण शुद्ध उपयोग को केवलज्ञान कहा है। यह शुद्धात्मा का ज्ञान हो जाता है तभी उसे खुद के जो दोष होते हैं, वे दिखाई देते हैं और केवलज्ञान अर्थात् संपूर्ण।

भगवान महावीर को केवलज्ञान उपजा, तब तक दोष दिखते थे। भगवान को केवलज्ञान उपजा, वह काल और खुद के दोष दिखाई देने बंद होने का काल, एक ही था! वे दोनों ही समकालीन थे। अंतिम दोष का दिखाई देना बंद होना और इस तरफ केवलज्ञान प्रकट हो जाना, ऐसा नियम है।

'मुझ में भूल ही नहीं है' ऐसा तो कभी भी नहीं बोल सकते, बोल ही नहीं सकते। 'केवल' होने के बाद ही भूलें नहीं रहतीं। दोषों को देखकर धोने से आगे बढ़ सकते हैं, प्रगति होती है, नहीं तो फिर भी आज्ञा में रहने से लाभ तो है। उससे आत्मा में रह पाते हैं। जागृति के लिए सत्संग और पुरुषार्थ चाहिए। सत्संग में रहने के लिए पहले आज्ञा में रहना चाहिए। जागृति तो निरंतर बनी रहनी चाहिए। यह तो दिन में भी बोरे में आत्मा बंद रखें तो कैसे चलेगा?

शुद्ध उपयोग के अलावा अन्य कोई पुरुषार्थ नहीं है। शुद्ध उपयोग को चूकना, उसे प्रमाद कहा है। एक क्षण के लिए भी गाफिल नहीं रहना चाहिए। यह ट्रेन सामने से आ रही हो तो वहाँ पर गाफिल रहते हो? जब कि यह तो अनंत जन्मों की भटकन है, तो वहाँ पर गाफिल कैसे रह सकते हैं?

शुद्धात्मा और प्रतिष्ठित आत्मा का भेद

प्रश्नकर्ता : दादा, आप जब ज्ञान देते हैं तब उस ज्ञान में जो भेद ज्ञान होता है, उस समय शुद्धात्मा और प्रतिष्ठित आत्मा दो विभाजन हो जाते हैं। अब शुद्धात्मा जो है वह देखने वाला और जानने वाला रहा और जो प्रतिष्ठित आत्मा है, वह *गलन* है।

दादाश्री : *गलन* अर्थात् करने वाला और भोगने वाला।

प्रश्नकर्ता : करने वाला और भोगने वाला वह। अर्थात् यह प्रतिष्ठित आत्मा जो कुछ भी करता है, उसे शुद्धात्मा निहारता रहता है?

दादाश्री : हाँ, ठीक है। प्रतिष्ठित आत्मा जो कुछ भी करता है, उसे शुद्धात्मा देखता है। प्रतिष्ठित आत्मा का मतलब क्या है? कि तीन योगों से प्रतिष्ठित आत्मा कहलाता है। मनोयोग, वचनयोग और काया योग और ये तीनों क्या कर रहे हैं, उन्हें देखना वही है इस शुद्धात्मा का कार्य।

प्रश्नकर्ता : शुद्धात्मा और प्रतिष्ठित आत्मा में क्या अंतर है?

दादाश्री : शुद्धात्मा मूल वस्तु है और जो प्रतिष्ठित आत्मा है, वह मान्यता है। रोंग मान्यता, रोंग बिलीफ से उत्पन्न हुआ पुतला, वह राइट बिलीफ से खत्म हो जाता है। प्रतिष्ठित आत्मा यानी यह पुतला उत्पन्न हुआ है, प्रकृति का।

प्रतिष्ठित आत्मा ही यह सब कार्य कर रहा है, 'शुद्धात्मा' कुछ भी नहीं करता है। चलना-फिरना, वे सभी अनात्मा के गुणधर्म हैं, आत्मा के नहीं है। आत्मा रात में भी सोता नहीं है और दिन में भी सोता नहीं है, अनात्म भाग सोता है। जो क्रिया करता है, वही सोता है। जो क्रिया करता है, उसे रेस्ट (आराम) की ज़रूरत है। शुद्धात्मा तो क्रिया करता ही नहीं है तो उसे रेस्ट की क्या ज़रूरत? रेस्ट कौन ढूंढता है? जो रेस्ट में इन्टरेस्टेड (इच्छुक) होता है वह। वह कौन है? प्रतिष्ठित आत्मा। ये सारी क्रियाएँ प्रतिष्ठित आत्मा की हैं। प्रतिष्ठित आत्मा को नींद ठीक से आई या ठीक से नहीं आई यह जाना किसने? उसकी क्रिया को जाना किसने? शुद्धात्मा ने। शुद्धात्मा, प्रतिष्ठित आत्मा की किसी भी क्रिया में दखल देता ही नहीं है। केवल देखता है और जानता है। दखल तो प्रतिष्ठित आत्मा की है। प्रतिष्ठित आत्मा जो जानता है, वह ज्ञेय है और प्रतिष्ठित आत्मा को जो ज्ञेय के रूप में जानता है, वह 'शुद्धात्मा' है। प्रतिष्ठित आत्मा की दखल किस कारण से हैं? क्योंकि वह इन्टरेस्टेड है। शुद्धात्मा को इन्टरेस्ट (रस) नहीं है। वह तो ज्ञाता-द्रष्टा और परमानंदी है। 'शुद्धात्मा' स्व-पर प्रकाशक है, जबकि प्रतिष्ठित आत्मा पर प्रकाशक है। 'शुद्धात्मा' प्रतिष्ठित आत्मा को भी देखता है और जानता है इसलिए प्रतिष्ठित आत्मा ज्ञेय है। शुद्धात्मा और प्रतिष्ठित आत्मा के बीच ज्ञाता-ज्ञेय का संबंध मात्र है।

'मैं कर रहा हूँ', वही परपरिणति

आत्मा ज्ञाता-द्रष्टा रहे और खुद का कर्ताभाव नहीं रहे, वह है स्वपरिणति। और कर्ताभाव उत्पन्न हो, किसी भी प्रकार की क्रिया को खुद, 'मैं कर रहा हूँ', ऐसा माने तो वह परपरिणति कहलाती है। और (अब) 'मैं नहीं करता, कौन करता है',

वह समझ गया। 'मैं नहीं करता', ऐसा भाव आएगा कब, जब यह समझ जाए कि, 'कौन कर रहा है' तब। अब आप नहीं करते, यह बात तय हो गई न?

प्रश्नकर्ता : वह तो सिद्ध हो गया, दादा।

दादाश्री : वह स्वपरिणति कहलाती है।

तू अपने आपको 'मैं शुद्धात्मा हूँ', ऐसा भूल जाए और कहे कि 'यह मैंने किया', तो परपरिणति कहलाएगी और तू 'मैं शुद्धात्मा हूँ', ऐसा जानकर कहे कि, 'चंदू ने किया', वही स्वपरिणति कहलाती है। उसे जैसा है वैसा कहना, वह है स्वपरिणति और जैसा नहीं है वैसा आरोपण करना, वह परपरिणति है।

अब आप शुद्धात्मा हो, वह स्वपरिणति कहलाती है और परपरिणति आपको रहेगी, वह तो व्यवस्थित के ताबे में हुई। वह परपरिणति अलग ही है।

व्यवस्थित के ज्ञान से परपरिणति खत्म हो गई है। शुद्धात्मा का *लक्ष* बैठ गया और व्यवस्थित का ज्ञान बैठ गया इसलिए यह कर रहा है, ऐसा समझकर उस पर द्वेष नहीं होता।

प्रश्नकर्ता : कर्ताभाव पहले से निकाल दिया।

दादाश्री : कर्ताभाव आपका तो सही परंतु औरों के प्रति भी कर्ताभाव खत्म हो गया। दूसरा कर रहा है, वह कर रहा है, वे कर रहे हैं, वह सबकुछ खत्म हो गया। 'मैं कर रहा हूँ, वह कर रहा है, वे कर रहे हैं', वह सब भी खत्म हो गया। निमित्तभाव आ गया है।

अकर्ता पद वह स्वपरिणति

प्रश्नकर्ता : श्रीमद् जी का एक वाक्य है कि 'जब तक शुद्ध परिणति नहीं हो जाती तब तक परम विश्वास प्राप्त नहीं होता, परम श्रद्धा प्राप्त नहीं होती।' वह समझाइए।

दादाश्री : शुद्ध परिणति अर्थात् 'मैं शुद्ध आत्मा हूँ', वह खुद का लक्ष। 'मैं यह देह नहीं हूँ, मैं शुद्धात्मा हूँ' और बाकी सब भी 'शुद्धात्मा हैं', ऐसा उसे पक्का हो जाना चाहिए तब शुद्ध परिणति उत्पन्न होती है। यदि किसी और को, शुद्धात्मा को कर्ता देखें तो शुद्ध परिणति नहीं कही जाएगी। किसी और को अकर्ता देखें। खुद अकर्ता, सामने वाला भी अकर्ता। मैं कर रहा हूँ, तू कर रहा है और वे कर रहे हैं, ये तीनों जो हैं, वे कर्तापद नहीं होने चाहिए।

एक, कर्तापद और दूसरा, अकर्तापद। कर्तापद में, 'मैं चंदूलाल और मैं ही यह सब करता हूँ', वह परपरिणति है और वह अनंत जन्मों तक संसार में भटकाने वाली ही है और दूसरा, अकर्तापद वह स्वपरिणति है। स्वपरिणति मोक्ष में ले जाती है। स्वपरिणति को भगवान ने 'मोक्ष' कहा है। एक होती है अशुद्ध परिणति और वह प्रसवधर्मी है। उससे निरे बच्चे ही जन्मते रहते हैं। और दूसरी है, शुद्ध वह स्वधर्मी परिणति, उससे मोक्ष की ओर प्रगति करते हैं। दो ही परिणति हैं।

प्रकृति को देखना, वह यथार्थ ज्ञाता-दृष्टापन

प्रश्नकर्ता : अब दादा, वह जो आपने कहा है कि अब आप अपने आप शुद्धात्मा का काम करते रहो, तो इसका मतलब क्या ज्ञाता-दृष्टा और परमानंदी रहना, ऐसा है?

दादाश्री : बस, और कुछ भी नहीं। ज्ञाता-दृष्टा और परमानंदी! और 'चंदूभाई की प्रकृति क्या कर रही है,' वह देखते रहो। इनकी गाड़ी आए तब चंदूभाई कहेंगे, 'यह टकरा जाएगी,

ऐसा होगा, वैसा होगा।' तब आपको वह देखते रहना है कि 'अरे वाह!' ये *पुद्गल* पर्याय हैं सारे। इन्हीं को देखना हैं। खुद की प्रकृति को देखते रहना है।

अर्थात् ज्ञाता-दृष्टा का सब से बड़ा अर्थ वह है। अंदर खुद क्या कर रहे हैं, मन-बुद्धि-चित्त और अहंकार, ये सब क्या कर रहे हैं, उन सब को सर्वस्व प्रकार से जाने और देखें, बस। और कुछ नहीं।

आप आत्मा ही हो और ज्ञाता-दृष्टा हो। यह हो जाए या वह हो जाए, आपका ज्ञाता-दृष्टापन यदि ज़रा सा भी छोड़ा तो अंदर परेशानी होगी। आप जो हो वह हो। यह तो जो ज्ञान दिया है, 'हम शुद्धात्मा हैं' वह ज्ञान तो वैसे का वैसा ही रहना चाहिए।

प्रश्नकर्ता : *'केवल निज स्वभाव का अखंड बरते ज्ञान।'* तो आपने जैसा कहा है, अब आत्मा में ही पूरे दिन रहा करते हैं, तो उसी को '*अखंड ज्ञान बरते*' कहा जाता है?

दादाश्री : वे कुछ और कहना चाहते हैं। 'केवल निज स्वभाव का अखंड बरते ज्ञान' अर्थात् निरंतर ज्ञाता-दृष्टा स्वभाव, उसके अलावा अन्य कुछ भी नहीं रहता है, उसके लिए कहना चाहते हैं। अभी तो अपने से दूर है ज़रा। वह पद दूर है।

निरंतर ज्ञाता-दृष्टा वही केवलज्ञान

प्रश्नकर्ता : अब शुद्धात्मा की जागृति और ज्ञाता-दृष्टा भाव बहुत रहता है। जब ज्ञाता-दृष्टा भाव में रहता हूँ तब उस समय मैं कुछ अलग ही चीज़ हूँ, ऐसा अनुभव होता है और ठंडक महसूस होती है।

दादाश्री : ऐसा तो लगेगा ही न! इसकी तो बात ही अलग है, ऐसा लगता है और तब हमें ठंडक बहुत महसूस होती है। वह तो केवलज्ञान की ठंडक कहलाती है। कोई-कोई महात्मा तो केवलज्ञान की ठंडक अनुभव कर सकते हैं। अपने कई महात्माओं को तो कई बार अंदर ऐसे-ऐसे क्षण आते हैं कि तब ऐसा भी बोलते हैं कि 'मैं केवलज्ञान स्वरूप हूँ'। ऐसा बोल सकते हैं, क्योंकि किसी-किसी समय केवलज्ञान स्वरूप में आ जाता है व्यक्ति। अंश-अंश करके भाग उत्पन्न हुआ है। अब जैसे-जैसे अंदर की उधारी चुकता होगी और बैंक से जितने ओवरड्राफ्ट लिए हैं, जैसे-जैसे वे सब चुकता होते जाएँगे, वैसे-वैसे यह सब समझ में आता जाएगा।

संपूर्ण ज्ञाता-दृष्टा तो हो गए हैं सभी, लेकिन निरंतर ज्ञाता-दृष्टा रह पाएँ तो केवलज्ञानी। निरंतर रहना चाहिए।

वह तो ऐसा है न कि जो संपूर्ण रूप से ज्ञाता-दृष्टा रहते हैं, वे केवलज्ञानी हैं। लेकिन आंशिक रूप में रहता है न, तो थोड़े-थोड़े अंश करके बढ़ता जाता है। जैसे-जैसे कर्मों का *निकाल* होता जाता है, वैसे-वैसे केवलज्ञान के अंश बढ़ते जाते हैं। अत: उसमें कोई भी दखल नहीं है। यही रास्ता है, यही हाइवे है। जैसे-जैसे ये फाइलें कम होती जाती हैं, वैसे-वैसे ज्ञाता-दृष्टापन का अनुपात बढ़ता जाता है। बढ़ते-बढ़ते केवलज्ञान तक पहुँचता है, एकदम से नहीं हो जाता।

आज्ञा के आराधन से प्राप्त कर सकते हैं निरालंब पद

आपको ये जो आज्ञाएँ दी हैं, उनका आराधन करते-करते उसके फल स्वरूप यह (स्थिति) आकर रहेगी। शुद्धात्मा तो हो गए लेकिन शुद्धात्मा बनने के बाद जो आराधन दिया है, उसके फल स्वरूप अस्पर्श्य और निरालंबी आत्मा आएगा। 'मैं

शुद्धात्मा हूँ', यह तो शब्द का अवलंबन है। निरालंब, वही भगवान हैं।

इन पाँच आज्ञाओं का पालन करने से चारित्र उत्पन्न होता है। पाँच आज्ञा का पालन करना वह प्रथम चारित्र है, आज्ञाचारित्र है और उसके बाद दरअसल चारित्र आएगा।

प्रश्नकर्ता : उनमें से जो परिणामित होगा, वह असल चारित्र है? वर्तन के बाद परिणामित होगा तब वह असल चारित्र है?

दादाश्री : निराधार बन जाए, वह असल है। यह साधारी है, आज्ञा का। आज्ञा का आधार है। बाद में निराधार हो जाएगा। निरालंब, कोई अवलंबन नहीं। यह पूरा जगत् अवलंबन की वजह से खड़ा है।

प्रश्नकर्ता : फिर आज्ञा रहेगी ही नहीं? तो फिर आज्ञा का क्या होगा?

दादाश्री : वे गायब हो जाएँगी, वहाँ पर ज़रूरत ही नहीं रही। किनारा आने के बाद क्या हमें नाव पर दया करनी पड़ेगी?

प्रश्नकर्ता : नहीं।

दादाश्री : हमें तो उतरकर चले जाना है। नाव अपने आप ही वापस चली जाएगी। उसी प्रकार आज्ञा अपने घर चली जाएँगी, हमें अपने घर चले जाना है। उतार दिया, डेक पर। किनारे पर उतार देते हैं न?

प्रश्नकर्ता : जी, किनारे पहुँचा दिया।

दादाश्री : पहुँचा दिया। ये आज्ञाएँ किनारे तक पहुँचा देंगी वर्ना थपेड़े खिलवाएगी।

'मैं शुद्धात्मा' वह शब्दावलंबन

आपको जो यह दिया है न, वह शुद्धात्मा पद है। अब शुद्धात्मा पद से ही मोक्ष का सिक्का लग गया। यह जो शुद्धात्मा पद प्राप्त होता है लेकिन वह शुद्धात्मा शब्द का अवलंबन कहलाता है। जब निरालंब हो जाएगा तब आत्मा दिखाई देगा अच्छी तरह से।

प्रश्नकर्ता : हाँ, तो वह निरालंब दशा कब आएगी?

दादाश्री : अब धीरे-धीरे निरालंब की तरफ ही जाओगे। हमारी इन आज्ञाओं में चले कि निरालंब की तरफ चले। इन शब्दों का अवलंबन धीरे-धीरे चला जाएगा और अंत में आखिरकार निरालंब उत्पन्न होकर रहेगा। निरालंब अर्थात् उसके बाद किसी की कोई भी ज़रूरत न रहे। पूरा गाँव चला जाए तो भी घबराहट न हो, भय नहीं लगे। कुछ भी नहीं। किसी के भी अवलंबन की ज़रूरत न पड़े। अब धीरे-धीरे आप उस तरफ ही चलने लगे हो। अभी आप इतना ही करते रहो कि 'शुद्धात्मा हूँ', तो काफी है!

प्रश्नकर्ता : अत: आत्मदर्शन के बाद में जो स्थिति आती है, वह बिल्कुल निरालंब स्थिति ही हो सकती है न?

दादाश्री : निरालंब होने की तैयारियाँ होती जाती है। अवलंबन कम होते जाते हैं। अंत में निरालंब स्थिति आती है।

आप सब मुझसे शुद्धात्मा प्राप्त करते हो। अब आपको अपने आप ही उस शुद्धात्मा का निरंतर *लक्ष* (जागृति) रहता है, सहज रूप से रहता ही है, याद नहीं करना पड़ता, आपको चिंता-वरीज़ वगैरह नहीं होतीं, संसार में क्रोध-मान-माया-लोभ नहीं होते लेकिन फिर भी वह मूल आत्मा नहीं है। आपको जो प्राप्त हुआ है, वह शुद्धात्मा है यानी कि आपने मोक्ष के पहले दरवाज़े में प्रवेश किया है। इसलिए आपके लिए

तय हो गया है कि अब आप मोक्ष प्राप्त करोगे। लेकिन मूल आत्मा तो उससे भी बहुत आगे बहुत दूर है।

आपका इन शब्दों का अवलंबन चला जाए, उसके लिए इन पाँच आज्ञा का पालन करो, तो धीरे-धीरे दर्शन दिखता जाएगा। दिखते-दिखते-दिखते खुद के सेल्फ में ही अनुभव रहेगा। उसके बाद शब्दों की ज़रूरत नहीं पड़ेगी। इस प्रकार 'शॉर्ट कट' में तो आ गए न!

प्रश्नकर्ता : एकदम 'शॉर्ट कट' में आ गए, हं।

दादाश्री : तो अब दादा के पीछे पड़ना पड़ेगा, महीने-दो महीने। अगर सिर्फ पैसों के पीछे पड़े रहोगे तो फिर दादा रोज़ नहीं मिलेंगे।

प्रश्नकर्ता : दादा के पीछे पड़ना ही है।

दादाश्री : थोड़े बहुत दादा के पीछे पड़ें होंगे तो आपका सारा एडजस्टमेन्ट ठीक हो जाएगा। फिर ऐसा कुछ हमेशा के लिए ज़रूरी नहीं है। यह हमेशा के लिए नहीं है। यह हमेशा के लिए पड़े रहने की जगह नहीं है। इस काल में तो ऐसा किसी मनुष्य से हो ही नहीं सकता कि हमेशा पड़ा रह सके। बिल्कुल लफड़े वाला काल है।

अंत में अनुभव और अनुभवी एक

प्रश्नकर्ता : शुद्धात्मा वह अवलंबन है। यदि वह न होता तो निरालंब भी नहीं होता लेकिन 'आत्मा' शब्द तो एक संज्ञा ही है न?

दादाश्री : ऐसा है न, इस शब्द का आलंबन लेते-लेते, यह रास्ता है, सीढ़ी है। सीढ़ी चढ़ते-चढ़ते जब ऊपर पहुँचेंगे तब प्राप्त होगा। शुद्धात्मा करते-करते जैसे-जैसे अनुभव होता जाएगा तब फिर उस अनुभव का भाग रहेगा। उसके बाद शुद्धात्मा शब्द खत्म हो जाएगा। वह निरालंब कहलाता है।

प्रश्नकर्ता : लेकिन लोगों को आप जो ज्ञान देते हैं, क्या उससे मूल आत्मा प्राप्त हो जाता है?

दादाश्री : वह जो आत्मा का अनुभव रहता है न, वही मूल आत्मा है। लेकिन जैसे-जैसे वह अनुभव एक जगह पर इकट्ठा होते-होते मूल जगह पर आता जाएगा, वैसे-वैसे वही खुद का पूर्ण स्वरूप बन जाएगा। अभी की दशा में अनुभव और अनुभवी दोनों अलग हैं, जबकि वहाँ पर एकाकार होते हैं।

जब यह माल खाली हो जाएगा तब सभी अनुभव होंगे। वह माल जो अनुभव में दखल करता रहता है, स्वाद नहीं आने देता। जैसे कि यदि एक व्यक्ति ने 40 लाख रुपये का ओवरड्राफ्ट लिया हो और वह बेकार हो जाए, नौकरी-व्यापार कुछ भी न रहे तब अगर कोई व्यक्ति उसे 15 हज़ार की नौकरी दिलवा दे तो उसका उपकार मानना चाहिए या नहीं मानना चाहिए? व्यापार था, तब ज़रा सी भी समझ नहीं थी, 40 लाख रुपये का कर्ज़ चढ़ा दिया!

उपकार मानना चाहिए न? उपकार मानता भी है। दो-चार महीनों बाद जब वह व्यक्ति मिले तब वह पूछे, 'अब कैसा है? आनंद है न?' 'नहीं! कैसा आनंद? अभी तो वहाँ पैसे चुका रहा हूँ और खाने को मिल रहा है।' अरे भाई, उधार लिया है तो चुकाना ही पड़ेगा न! अत: जब तक यह सारा उधार न चुक जाए तब तक तो रहेगा। उसके बाद मज़ा आएगा, वर्ना फिर भी शांति तो रहती है, चिंता नहीं होती। अगर पाँच आज्ञा में रहे न, तो चिंता मुक्त रह सकते हैं।

अगर पाँच हज़ार लोगों का भी कुछ काम

हो रहा हो न, तो अच्छी बात है। बाकी, वहाँ मोक्ष में जाने की क्या जल्दी है? अब हम ऐसी जगह पर आ गए हैं कि यहाँ से वापस निकालने वाला कोई है ही नहीं। यदि आप मेरी आज्ञा पालन करोगे तो इस जिम्मेदारी में से आपको कोई भी वापस नहीं निकाल सकेगा। क्योंकि आपको आज्ञा के अधीन रहना पड़ेगा, वर्ना वापस निकाल भी सकते हैं। जबकि मुझे वापस निकालने वाला कोई नहीं है। क्योंकि मैं तो कहता हूँ, 'निरालंब हो चुका हूँ'। आपको तो शुद्धात्मा शब्द का अवलंबन हैं लेकिन वह शब्द अनुभव के रूप में है जबकि मूल आत्मा तो नि:शब्द है, अत: फिर अनुभव होते-होते अनुभवरूप हो जाएगा, तब खुद शुद्धात्मा (मूल आत्मा) हो जाएगा।

प्रश्नकर्ता : उस शुद्धात्मा स्वरूप का अनुभव कब होगा?

दादाश्री : निरंतर हो ही रहा है न! 'मैं चंदूभाई हूँ', वह जो देहाध्यास का अनुभव था, वह अनुभव टूट गया है और अब आत्मा का अनुभव हुआ है। और कौन सा अनुभव? ऐसा ज्ञान अनुभव, यह जब रेग्यूलर स्टेज में आ जाएगा तो फिर उसे आनंद आता जाएगा।

और आत्मा का अनुभव कितने घंटे रहता है? चौबीसों घंटे आत्मा का अनुभव रहता है। पहले यह अनुभव था कि 'मैं चंदूभाई हूँ' और अब यह है 'मैं शुद्धात्मा हूँ', ऐसा अनुभव!

रिलेटिव में से एब्सल्यूट की तरफ

कोई अवलंबन न रहे, उस तरह से निरालंब होकर बैठे हैं हम। इसलिए हम पर चाहे कैसे भी प्रयोग करो फिर भी हमें स्पर्श नहीं करेंगे। क्योंकि हमारा स्वरूप निरालंब है। अवलंबन वाले को पकड़ते हैं कि मैं चंदूभाई हूँ, फलाना हूँ। मैं शुद्धात्मा हूँ, मैं ज्ञानी हूँ, वह भी अवलंबन कहलाता है।

प्रश्नकर्ता : दादाजी, आपने कहा कि जो रिलेटिव है वह वर्ड में है, शब्दों में है और एब्सल्यूट निरालंब है तो रिलेटिव और एब्सल्यूट में क्या अंतर है?

दादाश्री : एब्सल्यूट तो बहुत बड़ी चीज़ है। इस शुद्धात्मा में आ गए न, तो आप मोक्ष के दरवाज़े के अंदर आ गए। आप ऐसे दरवाज़े में प्रवेश कर चुके हो कि अब आपको कोई बाहर नहीं निकाल सकता। लेकिन फिर भी यह सापेक्ष है। सापेक्ष क्यों? वह इसलिए कि अगर आज्ञा का पालन करोगे तभी। वर्ना अगर आज्ञा पालन नहीं करोगे तो बाहर निकाल देंगे। आपके पास यह सापेक्ष है। अत: अंदर आ चुके हो और अगर ज़्यादा नहीं तो पचास-साठ प्रतिशत आज्ञा का पालन करो। हंड्रेड परसेन्ट पालन नहीं किया जा सकता, मैं जानता हूँ कि यह काल विचित्र है। लेकिन पचास-साठ प्रतिशत भी यदि आज्ञा का पालन करते हो, तो आपको कोई बाहर नहीं निकालेगा।

प्रश्नकर्ता : तो अभी तक यह निरालंब की सीढ़ी बाकी है ना? एब्सल्यूट की सीढ़ी बाकी है ना?

दादाश्री : आपने अब इस मोक्ष के दरवाज़े में प्रवेश कर लिया है, तो अब क्यों उलझ रहे हो? दरवाज़े में घुसने ही कौन दे? लाख जन्मों में भी कोई घुसने न दे। प्रवेश कर लिया है तो उसका आनंद मनाओ न! अब फिर एक पद बाकी रहा है तो क्या उसकी चिंता करनी है? आपको कैसा लगता है?

प्रश्नकर्ता : समझने के लिए पूछा है।

दादाश्री : हाँ। खुद अपने आप को धन्य मानो, 'धन्य है मुझे कि मोक्ष के दरवाज़े में प्रवेश कर लिया है', ऐसा धन्य मानो। यदि मन पर आगे की चीज़ का बोझ रखोगे न तो मन में ऐसा रहा करेगा कि हमें वह पद नहीं मिला है, वह पद नहीं मिला है।

प्रश्नकर्ता : दादा, उस बोझ को हल्का करने के लिए आपसे प्रार्थना की है।

दादाश्री : वह ठीक है। आपको बोझ नहीं रखना है। वह तो अपने आप ही सामने आकर रहेगा अब। इन आज्ञाओं का पालन करोगे न, तो वह पद अपने आप आएगा। मुझे साफ-साफ कह देना चाहिए न, कि यह क्या है! करेक्टनेस तो आनी चाहिए न! केवलज्ञान! एब्सल्यूट! फॉरेन वाले समझते हैं एब्सल्यूट को। अत: हमने फॉरेन वालों को लिख दिया है कि 'हम थ्योरी ऑफ एब्सल्यूट में नहीं हैं, थिअरम ऑफ एब्सल्यूटिज़म में हैं'। थिअरम अर्थात् उसके अनुभव में ही है।

प्रश्नकर्ता : संपूर्ण जागृति ही केवलज्ञान है?

दादाश्री : संपूर्ण। और अभी जो आपकी जागृति बढ़ी है वह संपूर्ण होने की तैयारी कर रही है। संपूर्ण जागृति को ही निरालंब कहते हैं। अभी तो अवलंबन है, अभी तो आपको मेरे पास आना पड़ता है या नहीं? आपको मेरा अवलंबन लेना पड़ता है या नहीं? यह अवलंबन कहलाता है। 'मैं शुद्धात्मा हूँ', वह अवलंबन है। अभी ज्ञान का लाभ मिल रहा है न पूरा-पूरा? किसी भी जगह पर समाधान दे, ऐसा है न?

प्रश्नकर्ता : लेकिन दादा, उसी पर से पूरा विचार आता है न, हम जो यह एब्सल्यूट शब्द कहते हैं, तो उससे कौन सा चित्र बनता है?

दादाश्री : यह मूल आत्मा है न, वह एब्सल्यूट है। उसे अन्य किसी की ज़रूरत नहीं है। एब्सल्यूट का मतलब क्या है? निरालंब। उसे किसी के अवलंबन की ज़रूरत नहीं है, खुद अपने प्राण से ही जी रहा है। यानी इस तरह का प्राण नहीं है। खुद अपने आपसे ही जी रहा है। निरंतर सुख, निरंतर आनंद, वही आत्मा है।

मोक्षमार्ग में उच्च प्रकार का अवलंबन - 'शुद्धात्मा'

अब इस शुद्धात्मा पद की डिग्री में आए हैं, शुरुआत हुई है लेकिन अभी मूल आत्मा मीलों दूर है लेकिन आपने मोक्ष के दरवाज़े में प्रवेश कर लिया है। अब आपका मोक्ष हो गया है। लेकिन यहाँ पर रुक मत जाना।

आपको समझ में आया न, कि यह जो शुद्धात्मा प्राप्त हुआ है, वह अंतिम दशा नहीं है? वह तो इस बात का प्रमाण है कि मोक्ष के दरवाज़े में प्रवेश कर चुके हैं। मोक्ष के दरवाज़े में प्रवेश किया। वह तो शुद्धात्मा का अनुभव हुआ, *लक्ष,* प्रतीति और अनुभव।

बाकी, अगर मन में ऐसा मान बैठें कि अब यह अनुभव हुआ यानी पूरा हो गया। तो वह काम पूरा नहीं हुआ है! 'मैं शुद्धात्मा हूँ', वह आत्मा का अनुभव है, यह बात सही है। उसमें दो मत नहीं है! क्योंकि वह त्रिकाली बात है। कुछ काल (समय) के लिए नहीं है यह। आत्मा की सभी चीज़ें त्रिकालवर्ती होती हैं, कुछ ही काल के लिए हों, ऐसी नहीं होतीं। मुझे वह त्रिकाली अनुभव रहता है। आपको भी त्रिकाली रहता लेकिन आपके अंदर ये सारे बाधक हैं, संसार के सभी विघ्न।

'मैं शुद्धात्मा हूँ', वह भी अवलंबन है, शब्द का अवलंबन। लेकिन वह उच्च प्रकार का अवलंबन है। वह मोक्षमार्ग का है। उसकी सुगंध अलग है

न! लेकिन उससे भी आगे जाना है, निरालंब होना है। कितना ग़ज़ब का पुण्य है! ये बातें सुनने को भी न मिलें। शास्त्रों में नहीं हैं ये बातें!

प्रश्नकर्ता : तो एक-दो जन्मों में हो जाएँगे न निरालंब?

दादाश्री : हो ही जाओगे न! यह तो अपने आप ही सबकुछ हल्का हो गया है न! आर्तध्यान-रौद्रध्यान बंद हो गए। उससे मनुष्य एक अवतारी होता है। यही नियम है और शायद अगर दो जन्म हो जाएँ, तब भी क्या नुकसान है? अब इतने सारे जन्म बिगाड़े हैं। हमें खुद को भी लगता है कि हल्के फूल हो गए हैं।

महाविदेह क्षेत्र में हमेशा तीर्थंकर रहते ही हैं। तो बोलो, जब देखो तब ब्रह्मांड तो पवित्र ही है न?

प्रश्नकर्ता : हम तो दादा का वीज़ा बता देंगे।

दादाश्री : वीज़ा तो बताना पड़ेगा, तो अपने आप ही काम हो जाएगा। उससे तीर्थंकर को देखते ही आपके आनंद की सीमा नहीं रहेगी। पूरा जगत् विस्मृत हो जाएगा। जगत् का कुछ भी खाना-पीना अच्छा नहीं लगेगा। उस क्षण पूर्ण हो जाएगा। निरालंब आत्मा प्राप्त होगा। निरालंब के बाद कोई अवलंबन नहीं रहा।

निरालंब, केवलज्ञान स्वरूप समझ रूपी

प्रश्नकर्ता : निरालंब स्वरूप, जैसा आपको दिखाई देता है वैसा है न?

दादाश्री : हाँ। निरंतर, सब से अंतिम स्वरूप, निरालंब।

प्रश्नकर्ता : ऐसा होना चाहिए न, कि हमें खुद को दिखाई दे?

दादाश्री : हाँ, आपको यह शब्द का अवलंबन दिया है, 'मैं शुद्धात्मा हूँ' शब्द के अवलंबन से शुद्धात्मा हो गए और वह अनुभूति हुई, यों मोक्ष के दरवाज़े में घुस गए। उन्हें कोई वापस नहीं निकाल सकता, अगर जान-बूझकर कोई लड़ाई-झगड़ा नहीं करे तो। अंदर जाकर यदि लड़ाई-झगड़ा करेगा तो वापस निकाल देंगे। वह ठीक से रहे तो हर्ज नहीं है।

प्रश्नकर्ता : इस शब्द अवलंबन के बाद सूक्ष्म दादा से कितनी हेल्प मिलती है?

दादाश्री : उस तरफ ले जाएँगे, निरालंब में ले जाएँगे।

प्रश्नकर्ता : यह दैहिक निदिध्यासन निरालंब में ले जाएगा?

दादाश्री : उन्होंने जितना देखा है, वहाँ तक ले जाएगा।

प्रश्नकर्ता : लेकिन इसमें दैहिक निदिध्यासन ज़्यादा हेल्प करता है या वाणी का निदिध्यासन?

दादाश्री : सभी मिलकर हेल्प करते हैं। हाँ... इन्होंने जहाँ तक देखा है, वहाँ तक ले जाएगा।

प्रश्नकर्ता : आपको निरालंब दादा भगवान अर्थात् जो मूल स्वरूप दिखाई दिया, वह स्वरूप कैसा है?

दादाश्री : यहाँ पर कोई नहीं है, किस आधार पर परिचय दें?

प्रश्नकर्ता : क्या वह केवलज्ञान स्वरूप कहलाता है?

दादाश्री : लेकिन समझ रूपी, ज्ञान रूपी नहीं। एब्सल्यूट, जिसमें कोई मिक्सचर नहीं है, उस स्वरूप में। आपका तो मिक्सचर वाला है।

शुद्धात्मा की बोतल के साथ, ढक्कन के साथ। आत्मा बोतल है, शुद्ध उसका ढक्कन है। वर्ना, आपका तो सब बह जाएगा।

'शुद्धात्मा' अवलंबन के बाद होते हैं निरालंब

प्रश्नकर्ता : शुद्धात्मा का अवलंबन किसे है, आत्मा तो निरालंब है?

दादाश्री : प्रज्ञा को। इस शुद्धात्म पद की प्राप्ति होने पर केवलज्ञान के अंशों की शुरुआत हो जाती है। सर्वांश केवलज्ञान है। कुछ अंशों तक का केवलज्ञान ग्रहण हो जाए तो आत्मा बिल्कुल अलग ही दिखता रहता है, उसके बाद 'एब्सल्यूट' हो जाता है।

शुद्धात्मा हुए अर्थात् आप मोक्ष में आ गए, मोक्ष का वीज़ा मिल गया है आपको। आपकी गाड़ी चल पड़ी, 'मैं शुद्धात्मा हूँ', वह। शुद्धात्मा का अनुभव हुआ। 'मैं शुद्धात्मा हूँ', ऐसा भान हुआ है, वह शब्द रूपी भान है और निरालंब होने पर वह केवलज्ञान कहलाता है।

केवलज्ञान अर्थात् एब्सल्यूट। उसे यदि गुजराती में कहना हो तो निरालंब। हमें किसी भी तरह के अवलंबन की ज़रूरत नहीं है। इसलिए हम पर कोई भी चीज़ असर नहीं डालती, ऐसा स्वरूप है हमारा। जेल में बैठा दिया फिर भी खुद निरालंब, बाहर बैठा दे फिर भी निरालंब। क्योंकि अक्रम विज्ञान है, फुल स्टॉप (पूर्णविराम) विज्ञान है, यह कॉमा (अल्पविराम) विज्ञान नहीं है।

सर्वांश वीतरागता से, प्रकट होता है केवलज्ञान

बाहर का आप देखोगे, वह तो अलग बात है, लेकिन जब आप अपने अंदर का ही सबकुछ देखा करोगे, उस समय आप केवलज्ञान सत्ता में होंगे। लेकिन अंश केवलज्ञान होता है, सर्वांश नहीं।

जितने समय तक आप ज्ञायक रहते हो उतने समय तक आप भगवान, उतने समय तक केवलज्ञान के अंश इकट्ठे होते हैं।

वीतराग होने की शुरुआत से लेकर वीतराग होने के एन्ड (अंत) तक वीतराग होते, होते, होते, आगे बढ़कर और जब सर्वांश रूप से वीतराग हो जाए तब केवलज्ञान होता है। केवलज्ञान पहले नहीं होता, अंश वीतराग होते, होते, होते, होते जितने अंशों तक वीतराग हुआ, उतने अंशों तक केवलज्ञान हुआ। केवलज्ञान भी उतने अंशों तक माना जाता है। उसके बाद संपूर्ण केवलज्ञान कब माना जाता है कि जब सर्वांश वीतराग हो जाए तब संपूर्ण केवलज्ञान होता है।

निरालंब, वही केवलज्ञान स्वरूपी आत्मा

गजसुकुमार मूल आत्मा के आधार पर सिगड़ी का ताप झेल सके थे। मनुष्य ऐसा प्रयोग करके देखे तो? अरे, कोई ज्ञानी भी ऐसा नहीं कर सकते और गजसुकुमार को तो अंतिम मूलभूत आत्मा प्राप्त हो गया था, नेमिनाथ भगवान से प्राप्त हुआ था।

प्रश्नकर्ता : नेमिनाथ भगवान ने गजसुकुमार को जो ज्ञान दिया था, क्या वह बहुत ही अलग प्रकार का ज्ञान था?

दादाश्री : हमें उस प्रकार का ज्ञान है लेकिन शरीर की उतनी स्थिरता नहीं हैं। क्योंकि उनकी तो भगवान से ही बात हुई थी। नेमिनाथ भगवान की कृपा उतरी थी सीधी। और ज्ञान हमारे पास है, वही ज्ञान है। अंतिम ज्ञान!

प्रश्नकर्ता : तो फिर वह कौन सा ज्ञान था?

दादाश्री : खुद के मूल स्वरूप का ज्ञान।

प्रश्नकर्ता : निरालंब आत्मा, उन्हें पूर्णत: प्राप्त हो गया था?

दादाश्री : चरम स्थिति वाला निरालंब आत्मा ही प्राप्त हो गया था, वर्ना सिगड़ी जलाने पर आत्मा हाज़िर नहीं रह पाता। कहीं और ही चला जाता। चरम आत्मा का मतलब यह नहीं है, वह नहीं है, फलाँ नहीं है, यह नहीं, वह नहीं। यह नहीं, वह नहीं, वह नहीं, वह नहीं, वह नहीं... वह। भगवान तू कैसा, निरालंब!

भगवान ने उन्हें समझाया था कि, ''बहुत बड़ा उपसर्ग आ पड़े तब 'शुद्धात्मा', 'शुद्धात्मा' मत करना। शुद्धात्मा तो स्थूल स्वरूप है, शब्द रूपी है। उस समय तो सूक्ष्म स्वरूप में चले जाना।'' उन्होंने पूछा, 'सूक्ष्म स्वरूप क्या है?' तब भगवान ने समझाया था कि, 'सिर्फ केवलज्ञान ही है, अन्य कोई भी चीज़ नहीं'। तब गजसुकुमार ने पूछा, 'मुझे केवलज्ञान का अर्थ समझाइए'। फिर भगवान ने समझाया, 'केवलज्ञान, वह तो आकाश जैसा सूक्ष्म है, जबकि अग्नि स्थूल है। जो स्थूल है, वह सूक्ष्म को कभी भी नहीं जला सकता। मारा जाए, काटा जाए, जलाया जाए तब भी खुद के केवलज्ञान स्वरूप पर कोई भी असर नहीं हो सकता'। जब गजसुकुमार के माथे पर अंगारे धधक रहे थे तब उन्होंने कहा 'मैं केवलज्ञान स्वरूप हूँ' और तभी खोपड़ी फट गई, लेकिन उन पर कोई भी असर नहीं हुआ!

पूरे वर्ल्ड का अद्भुत पुरुष है 'यह'! 'केवलज्ञान स्वरूपी' आत्मा को जान लिया, उसी को 'जानना' कहते हैं।

'केवलज्ञान स्वरूप' अर्थात् 'एब्सल्यूट' ज्ञान स्वरूप है। केवलज्ञान आकाश जैसा है! आकाश जैसा स्वभाव है, अरूपी है! आत्मा आकाश जैसा सूक्ष्म है। आकाश को यदि अग्नि स्पर्श करे तो वह जलता नहीं है। अग्नि स्थूल है। बाकी सभी चीज़ें आत्मा की तुलना में स्थूल हैं!

केवलज्ञान स्वरूप कैसा दिखाई देता है? पूरे देह में सिर्फ आकाश जितना ही भाग खुद का दिखाई देता है। सिर्फ आकाश ही दिखाई देता है, अन्य कुछ भी नहीं दिखाई देता। उसमें कोई मूर्त चीज़ नहीं होती। यों धीरे-धीरे अभ्यास करते जाना है। अनादिकाल के अन्-अभ्यास का 'ज्ञानी पुरुष' के कहने से अभ्यास होता जाता है। अभ्यास हो जाने पर शुद्ध हो जाएगा!

गजसुकुमार ने जो आत्मा प्राप्त किया था, वह आत्मा हमारे पास है और तीर्थंकरों के पास भी वही आत्मा था। वह आत्मा ऐसा है कि इस काल में किसी को प्राप्त नहीं हो सकता। यह बात सही है। शुद्धात्मा से आगे बढ़ा, तो भी बहुत हो गया। शब्द से आगे बढ़ा कि 'यह तो शब्द का अवलंबन है' इतना समझने लगा तो वह वहाँ से निरालंब की तरफ जाएगा। फिर वह निरंतर निरालंब की तरफ जाएगा। शुद्धात्मा भी शब्द है न, अवलंबन शब्द का है जबकि मूल शुद्धात्मा ऐसा नहीं है।

फर्क, शुद्धात्मा स्वरूप और केवलज्ञान स्वरूप में

'शुद्धात्मा' शब्द तो सिर्फ संज्ञा ही है। उससे 'मैं शुद्ध ही हूँ, त्रिकाल शुद्ध ही हूँ।' उस संज्ञा में रह पाए तो फिर मज़बूत हो जाते हैं। शुद्धता के लिए नि:शंकता उत्पन्न होती है। उसके बाद का पद अर्थात् 'केवलज्ञान स्वरूप' 'अपना'!

केवलज्ञान, वह सूक्ष्म वस्तु है और शुद्धात्मा तो स्थूल है। शुद्धात्मा का सारा ही स्थूल पूरा हो जाएगा, उसके बाद सूक्ष्म में, केवलज्ञान में आएगा। आत्मा सिर्फ केवलज्ञान स्वरूप है। ये लोग स्थूल में जो कहते हैं वैसा नहीं है। वह विचारों से भी

परे है। केवलज्ञान अर्थात् सिर्फ ज्ञान स्वरूप, उसमें और कुछ भी मिलावट नहीं है। 'दरअसल आत्मा' तो 'केवलज्ञान स्वरूपी' ही है। यानी कि हम में और आप में अंतर क्या है? 'हम' 'केवलज्ञान स्वरूप' में रहते हैं और 'आप' (महात्मा) शुद्धात्मा के तौर पर रहते हो।

यह तो अद्‌भुत ज्ञान दिया है! रात को जब भी जागो तब हाज़िर हो जाता है कि 'मैं शुद्धात्मा हूँ'। आप जहाँ कहोगे वहाँ हाज़िर हो जाएगा और बहुत परेशानी आए तो निरंतर जागृत रहेगा। केवलज्ञान जैसी दशा हो जाए, ऐसा ज्ञान दिया है।

आज्ञा द्वारा अंश से सर्वांश केवलज्ञान

हमें यहाँ पर ज्ञान मिलता है न, आत्मज्ञान, उसके बाद पहले अंश केवलज्ञान हो जाता है। फिर वह अंश धीरे-धीरे, बढ़ते-बढ़ते सर्वांश होता है।

एक-एक अंश करके मोक्ष होता ही जाएगा, एकदम से मोक्ष नहीं हो जाता। केवलज्ञान भी एक-एक अंश करके होता जाता है। केवलज्ञान भी एकदम से नहीं हो जाता। अत: अपने यहाँ ज्ञान देने के बाद एक अंश, दो अंश, केवलज्ञान के अंश उत्पन्न होते ही हैं। वह अंश केवलज्ञान कहलाता है।

जितने अंश तक आत्मस्वभाव प्रकट होता जाता है उतने ही अंश तक केवलज्ञान प्रकट होता जाता है। कुछ भाग तक पहुँचने के बाद, उसके बाद सर्वांश हो जाता है। जब सर्वांश आत्मस्वभाव प्रकट होता है तब सर्वांश केवलज्ञान कहा जाता है। यानी कि एब्सल्यूट हो जाता है। एब्सल्यूट केवलज्ञान ही परमात्मा पद है।

वह आंशिक ज्ञान, इसे आंशिक केवलज्ञान कहते हैं। 356 डिग्री या 305 डिग्री पर आंशिक केवलज्ञान उत्पन्न होता है। मुझे 356 अंश तक का केवलज्ञान हुआ है, चार अंश बाकी हैं। और जितना दिखाई देता है, उतने ही केवलज्ञान के अंश मुझे दिखाई देते हैं।

प्रश्नकर्ता : केवलज्ञान भी आंशिक हो सकता है क्या?

दादाश्री : आंशिक अर्थात् वास्तव में वह केवलज्ञान नहीं होता। आंशिक ज्ञान कहकर उसे ऐसा बताना चाहते हैं कि यह मार्ग, केवलज्ञान की तरफ ही जा रहा है।

यह ज्ञान मिला और आज्ञा का पालन करते हो, तभी से केवलज्ञान के अंश इकट्ठे होने की शुरुआत हो जाती है। फिर दो अंश, चार अंश, ऐसे करते-करते जब 360 अंश पूरे हो जाते हैं, तब केवलज्ञान हो जाता है। मेरा 356 अंश पर है। आपके ये अंश इकट्ठे होते-होते 356 अंश तक पहुँचेंगे न! रियल व्यू पॉइन्ट और रिलेटिव व्यू पॉइन्ट, यदि निरंतर ऐसे भाव में रहे, वह केवलज्ञान है। वह भाव खत्म होने पर संपूर्ण केवलज्ञान हो जाएगा।

आत्मज्ञान और आज्ञा से प्राप्त होगा केवलज्ञान

अभी तो आपको मेरी पाँच आज्ञाओं का पालन करना है। जितनी आज्ञा पालन करोगे उतने केवलज्ञान स्वरूप होते जाओगे।

ये पाँच वाक्य ही केवलज्ञान के यथार्थ साधन हैं। उन साधनों से काम लेने पर केवलज्ञान उत्पन्न होगा। यह संसार बाधक नहीं है। इन पाँच वाक्यों का संसार से लेना-देना नहीं है।

आत्मज्ञान और ज्ञानी की आज्ञा के अनुसार बरते, तब फिर केवलज्ञान होता है। ज्ञानी से मिलने के बाद केवलज्ञान प्राप्ति बहुत दूर नहीं है, वर्ना

करोड़ों सालों तक, करोड़ों जन्मों में भी हो सके ऐसा नहीं हैं।

प्रश्नकर्ता : कृपालुदेव की बुक में पढ़ा था कि सत्संग में रहोगे तो केवलज्ञान नज़दीक है।

दादाश्री : वह सही है, सही लिखा है। आपको केवलज्ञान के लिए जल्दबाज़ी नहीं करनी है। आज तो इसी बात की ज़ल्दी करनी है कि रौद्रध्यान व आर्तध्यान न हो।

प्रश्नकर्ता : अभी जो ज़रूरी है, पहले वही करना चाहिए न?

दादाश्री : केवलज्ञान तो अपने आप ही सामने आ जाता है। उसे लेने नहीं जाना पड़ता।

शुरुआत शुद्धात्मा से, पूर्ण होगा परमात्मा पद पर

पहले शुद्धात्मा और जो परमात्मा है, वह खुद, रियल वस्तु है। वह स्टेशन अलग है और शुद्धात्मा का स्टेशन अलग है। शुद्धात्मा तो वस्तु स्वरूप का सब से पहला 'उपनगर' है। फिर ऐसे कितने ही 'उपनगर' आते हैं, उसके बाद फिर मुख्य स्टेशन आता है। जैसे-जैसे अनुभव बढ़ते जाएँगे न, वैसे-वैसे आगे के 'उपनगर' आते जाएँगे, स्टेशन बदलता जाएगा। आपको इस पहले स्टेशन पर उतार दिया है, मोक्ष की बाउन्ड्री में। शुद्धात्मा पहला स्टेशन है। वहाँ से सेन्ट्रल स्टेशन की ओर जाएँगे, तब जाकर अंतिम स्टेशन आएगा।

जो यहाँ पर आ चुका है, वह जागृति में रहता है। जागृति नामक पद उत्पन्न हो जाता है। खुद, खुद के दोष देखने लगता है। सारी जागृति उदयाकार नहीं होती। उदय आए तो उसमें हर्ज नहीं है, उदयाकार होने में हर्ज है। उदय तो ज्ञानी के भी होते हैं और अज्ञानी के भी होते हैं।

प्रश्नकर्ता : कभी जब स्व और पर की जागृति रहती है, तब निर्मलता का अंश आ जाता है।

दादाश्री : वह आगे के स्टेशनों तक पहुँचने की तैयारियाँ हैं। उससे भी आगे जाना पड़ेगा। मोक्ष का असल पुरुषार्थ ही वहीं से शुरू होता है।

ज्ञानी पुरुष से आत्मज्ञान जो समझ में आ गया, उससे उपनगर शुरू हो जाते हैं। बाकी, यदि साधु कहें 'शुद्धात्मा' तो कुछ नहीं होगा। अनंत जन्मों तक गाता रहे, फिर भी कुछ नहीं होगा। शुद्धात्मा का भान हो जाना चाहिए और 'मैं चंदूभाई हूँ' वह भान छूट जाना चाहिए।

ज्ञानविधि : इस काल में ऐश्वर्य प्रकट हुआ

प्रश्नकर्ता : यह जो ज्ञानविधि है, वह आपने बनाई है?

दादाश्री : वह उदय में आई है। यह हमारा जो ऐश्वर्य है, वह प्रकट हुआ है।

प्रश्नकर्ता : इसमें ग़ज़ब की शक्ति है!

दादाश्री : एक्ज़ेक्ट केवलज्ञान! पूरी ज्ञानविधि केवलज्ञान है! यह मेरी शक्ति नहीं है, ऐश्वर्य प्रकट हुआ है। दो घंटे में (कारण) मोक्ष दे दे, ऐसा ऐश्वर्य! जिसे दादा की ज्ञानविधि मिलती है, उसका मोक्ष हो जाता है, आत्मज्ञान हो जाता है। वर्ना लाख जन्म तक भी ठिकाना न पड़े।

यह ज्ञान भेदविज्ञान है। यह तो मतिज्ञान के टॉप तक पहुँचा हुआ ज्ञान है और सौ प्रतिशत मतिज्ञान को केवलज्ञान कहते हैं। यह लगभग छियानवे से आगे सतानवे प्रतिशत है, इसलिए यह भेदविज्ञान कहलाता है और सौ प्रतिशत पर केवलज्ञान कहलाता है।

प्रश्नकर्ता : तो फिर भेदज्ञान ही सर्वस्व ज्ञान है, ऐसा कह सकते हैं?

दादाश्री : भेदज्ञान ही सर्वस्व ज्ञान है और वही केवलज्ञान का दरवाज़ा है! अर्थात् बिल्कुल शुद्ध ज्ञान ही परमात्मा है, और कुछ भी नहीं। परमात्मा के पास देहधारी रूपी ऐसा शरीर नहीं होता, वे निर्देही हैं। शुद्ध ज्ञान स्वरूप हैं, केवलज्ञान स्वरूप हैं। वे अन्य किसी स्वरूप में हैं ही नहीं।

इसीलिए भगवान ने कहा है कि आत्मज्ञान जानो। आत्मज्ञान और 'केवलज्ञान' में ज़्यादा फर्क है ही नहीं। आत्मज्ञान जाना तो वह 'कारण केवलज्ञान' है जबकि केवलज्ञान, 'कार्य केवलज्ञान' है!

मैंने जो ज्ञान दिया है, वह आपको दर्शन में परिणमित हुआ है। अब यह जो ज्ञान है, हमारे साथ बैठोगे वैसे-वैसे उतने अंशों तक बढ़ता जाएगा और वैसे-वैसे शुद्ध उपयोग उत्पन्न होगा। जितना शुद्ध उपयोग उत्पन्न हुआ, उतना ज्ञान है। संपूर्ण रूप से निरंतर वैसा शुद्ध उपयोग बरते तो उसे कहते हैं केवलज्ञान! संपूर्ण शुद्ध उपयोग को केवलज्ञान कहा गया है। उसमें (महात्मा में) शुद्ध उपयोग में से केवलज्ञान के बीज बोए गए, अंश केवलज्ञान उत्पन्न हुआ है। उसे सर्वांश होने में टाइम लगेगा, हर किसी के पुरुषार्थ के अनुसार। यदि हमारी आज्ञा में रहे तो उसे संपूर्ण शुद्ध उपयोग कहा जाता है।

अब, अंतिम लक्ष केवलज्ञान स्वरूप

हम ज्ञान देने के साथ ही कहते हैं कि अब तुझे 'शुद्धात्मा हूँ' यह *लक्ष* बैठ गया है। इसलिए अब तुझसे जो कुछ कार्य होता है, अच्छा या खराब उसका मालिक तू नहीं है, तू शुद्ध ही है। पुण्य का दाग़ भी नहीं लगेगा और पाप का दाग़ भी नहीं लगेगा। शुभ का भी दाग़ नहीं लगेगा और अशुभ का भी दाग़ नहीं लगेगा। इसलिए तू शुद्ध ही है।

बाकी, शुद्धात्मा वह कोई परमात्मा नहीं है। शुद्धात्मा तो परमात्मा के यार्ड में आया हुआ स्थान है। 'शुद्धात्मा' पद आपको क्यों दिया गया है? हालांकि वह परमात्मा पद का *लक्ष* है लेकिन क्यों दिया गया है आपको? यह जो कुछ भी क्रिया होती है उस अच्छे-बुरे के लिए यू आर नॉट रिस्पोन्सिबल (आप ज़िम्मेदार नहीं हो), ऐसा शुद्धात्मा पद दिया है। आप शुद्ध ही हो, अच्छे-बुरे के लिए आप रिस्पोन्सिबल नहीं हो, ऐसा कहना चाहते हैं।

शुद्धात्मा वह क्या है कि अपना स्वरूप वह शुद्ध ही है। ज़ंग में गिर जाओ तब भी ज़ंग स्पर्शता नहीं, वहाँ तक हम आपको ले आए हैं। शुद्धात्मा पद मिलने के बाद में आगे केवलज्ञान स्वरूप बाकी रहता है, वह अंतिम पद है। केवलज्ञान एब्सल्यूट, अन्य कुछ है ही नहीं। एब्सल्यूट ज्ञान स्वरूप है। वह पूरा वर्तन में नहीं है लेकिन वह ज्ञान स्वरूप कैसा होता है वह हमने देखा है। बाकी, शुद्धात्मा तो पद है, वह स्टेशन (स्थान) है, यार्ड के अंदर वाला, अंतिम स्टेशन का यार्ड।

प्रश्नकर्ता : सही है, दादा। शुरुआत में हमारे लिए शुद्धात्मा पद, फिर आगे का पद केवलज्ञान स्वरूप आएगा?

दादाश्री : आत्मा खुद है ही केवलज्ञान स्वरूप। लेकिन पहले भ्रांति और उसमें से केवलज्ञान स्वरूप में बाहर आना, वह बहुत मुश्किल है। आत्मा का अनुभव होने के बाद में केवलज्ञान स्वरूप को समझना है, जैसे-जैसे वह आगे बढ़ता जाएगा, वैसे-वैसे उसे समझ में आता जाएगा। बोरीवली के रास्ते पर आप गए हुए हो

और कोई कहे कि इसी रास्ते से आप सीधे बोरीवली जाओगे तो बोरीवली आपको दिखाई देगा क्या? नहीं! वह तो जब आप वहाँ पहुँचोगे तब आपको दिखाई देगा। आप आत्मा के, केवलज्ञान के रास्ते पर हो लेकिन केवलज्ञान दिखाई नहीं देता आपको। वह तो ज्ञानी को ही दिखाई देता है, उनके नज़दीक है, नज़दीक पहुँच गए हैं, वे केवलज्ञान स्वरूप! वह त्रिकाल स्वभाव है।

ज्ञान का स्वरूप समझने के बाद एकदम प्रवर्तन में नहीं आता। समझने के बाद धीरे-धीरे सत्संग से ज्ञान-दर्शन बढ़ता जाता है और उसके बाद प्रवर्तन में आता जाता है। प्रवर्तन में आ जाए तब केवल आत्म प्रवर्तन, उसे कहते हैं 'केवलज्ञान'। दर्शन-ज्ञान के अलावा अन्य कोई प्रवर्तन नहीं है, उसे 'केवलज्ञान' कहा जाता है।

केवलज्ञान अर्थात् 'मैं शुद्धात्मा के अलावा और कुछ भी नहीं', वैसा श्रद्धा में आ जाए, ज्ञान में आ जाए और वर्तन में आ जाए तो वह केवलज्ञान है।

तीर्थंकर के दर्शन से उत्पन्न होती है अंतिम कक्षा

प्रश्नकर्ता : ये सब जो अपने महात्मा हैं, ये सब आगे की कक्षा में पहुँच पाएँगे न?

दादाश्री : वह तो, कभी न कभी पहुँचना ही है, और कुछ नहीं। यह कक्षा कब मिलती है, तीर्थंकर को देखते ही और दर्शन करते ही वैसी कक्षा हो ही जाती है। सिर्फ दर्शन से कक्षाएँ उत्पन्न होती हैं। आगे की कक्षाएँ सिर्फ दर्शन से ही, उनकी स्थिरता देखें, उनका प्रेम देखें, तो सब उत्पन्न हो जाती है। वे कहीं शास्त्रों के बनाने से नहीं बनी हैं। यह तो देखने से ही हो जाता है। अब अंतिम, अभी अगर यहाँ तीर्थंकर आ जाएँ तो आप सब को केवलज्ञान हो जाएगा। लेकिन ऐसा होगा नहीं और केवलज्ञान हो नहीं पाएगा, क्योंकि वैसा काल नहीं है। चौथा *आरा* आ नहीं सकता और कुछ बदल नहीं सकता।

प्रश्नकर्ता : तब तक दूज का चंद्रमा हो जाए तो भी बहुत है।

दादाश्री : फिर भी इस काल में काफी हो गया, इसमें तो, सिर्फ अंश ही बाकी रहा है। क्योंकि चिंता नहीं होती है, तो वह कैसा केवलज्ञान हुआ है? कितना बाकी रहा?

प्रश्नकर्ता : अभी शरीर होने के बावजूद भी हम मुक्तता अनुभव करते हैं तो मृत्यु के बाद में फिर मोक्ष में जा पाएँगे?

दादाश्री : नहीं, इस काल में इस क्षेत्र से मोक्ष में नहीं जा सकते और संपूर्ण मुक्ति नहीं हो सकती। संपूर्ण मुक्ति किसे कहा जाता है? केवलज्ञान को। केवल में जितने अंश बाकी रहते हैं, उतनी ही मुक्ति कम है। फिर भी मुक्त रूप से उसका सुख तो उसे पूरी तरह से बरतता ही है। केवलज्ञान होने के बाद ही संपूर्ण मुक्ति कह सकते हैं।

प्रश्नकर्ता : उन चार अंशों की पूर्ति के लिए महाविदेह क्षेत्र में जाना पड़ेगा या यहीं से हो जाएगा?

दादाश्री : वहाँ जाना ही पड़ेगा न! महाविदेह क्षेत्र में तो जाना पड़ेगा। क्योंकि यहाँ से सीधे हो सके, ऐसा नहीं है। क्योंकि, केवलज्ञान प्राप्त व्यक्ति होने चाहिए, उनके सिर्फ दर्शन से ही मुक्ति!

जय सच्चिदानंद

आत्मज्ञानी पूज्य नीरूमाँ और पूज्य दीपकभाई के आशीर्वाद प्राप्त आप्तपुत्रों के सत्संग कार्यक्रम

पश्चिम बंगाल - उड़ीसा

कोलकाता	**दिनांक : 22, 26 और 29 मार्च**	**संपर्क : 9830080820**
मालदा टाउन	**दिनांक : 27 मार्च**	**संपर्क : 8967826883**
बानीपुर (जांगीपुर)	**दिनांक : 28 मार्च**	**संपर्क : 9434532172**
कांदी (मुर्शिदाबाद)	**दिनांक : 28 मार्च**	**संपर्क : 9474076718**
भुवनेश्वर	**दिनांक : 30-31 मार्च और 1 अप्रैल**	**संपर्क : 7077902158**
कटक	**दिनांक : 2-3 अप्रैल**	**संपर्क : 8763090042**

आसाम

लेडो	**दिनांक : 27 मार्च**	**संपर्क : 8638802416**
तिनसुकिया	**दिनांक : 28-29 मार्च**	**संपर्क : 9954591264**
गुवाहाटी	**दिनांक : 30-31 मार्च**	**संपर्क : 9954821135**
नगाँव	**दिनांक : 1 अप्रैल**	**संपर्क : 9864888886**
तेजपुर	**दिनांक : 3 अप्रैल**	**संपर्क : 9101753686**
नलबाड़ी	**दिनांक : 5 अप्रैल**	**संपर्क : 9854251146**
बक्सा	**दिनांक : 6-7 अप्रैल**	**संपर्क : 8011249648**

समय और स्थल की जानकारी के लिए दिए गए नंबर पर संपर्क करे।

पूज्य नीरूमाँ / पूज्य दीपकभाई को देखिए टी.वी. चैनल पर...

भारत

- **'साधना'** पर हर रोज़ सुबह 7-50 से 8-15 तथा रात 9-30 से 9-55 (हिन्दी में)
- **'दूरदर्शन उत्तरप्रदेश'** पर हर रोज़ सुबह 7-30 से 8 (हिन्दी में)
- **'दूरदर्शन उत्तरप्रदेश'** पर हर रोज़ दोपहर 3 से 4 (हिन्दी में)
- **'आस्था'** पर हर रोज़ रात 10 से 10-20 (हिन्दी में)
- **'दूरदर्शन सह्याद्रि'** पर हर रोज़ सुबह 7 से 7-45 (मराठी में)
- **'दूरदर्शन सह्याद्रि'** पर हर रोज़ दोपहर 3-30 से 4 सोम से शुक्र और दोपहर 11-30 से 12 शनि-रवि
- **'आस्था कन्नड़ा'** पर हर रोज़ दोपहर 12 से 12-30 तथा शाम 4-30 से 5 (कन्नड़ा में)
- **'दूरदर्शन चंदना'** पर हर रोज़ शाम 6-30 से 7 (कन्नड़ा में)
- **'धर्म संदेश'** पर हर रोज़ सुबह 2-50 से 3-50, दोपहर 2-30 से 3 तथा रात 8 से 9 (गुजराती में)
- **'दूरदर्शन गिरनार'** पर रोज़ सुबह 7-30 से 8-30, रात 9 से 10 (गुजराती में)
- **'वालम'** पर हर रोज़ शाम 6 से 6-30 (सिर्फ गुजरात राज्य में) (गुजराती में)

Pujya Deepakbhai's UK Satsang Schedule - 2024					
Date	**Day**	**From**	**to**	**Event**	**Venue**
04-Apr-24	Thu	7:30 PM	10:00 PM	Pujyashree Satasang	Harrow Leisure Centre, Byron Hall, Christchurch Avenue, **Harrow**, HA3 5BD.
05-Apr-24	Fri	7:30 PM	10:00 PM	Pujyashree Satasang	
06-Apr-24	Sat	10:30 AM	12:30 PM	Aptaputra Satasang	
06-Apr-24	Sat	4:30 PM	7:30 PM	**GNAN VIDHI**	
07-Apr-24	Sun	10:30 AM	12:30 PM	Pujyashree Satasang	
08-Apr-24	Mon	7:30 PM	10:00 PM	Pujyashree Satasang	Shree Prajapati Community Centre, 21, Ulverscroft Road, **Leicester**, LE4 6BY.
09-Apr-24	Tue	7:00 PM	10:00 PM	**GNAN VIDHI**	

आत्मज्ञानी पूज्य दीपकभाई के सानिध्य में अडालज में हिन्दी सत्संग शिविर

5 से 9 जून - सत्संग और 8 जून - ज्ञानविधि

सूचना : यह शिविर गुजराती भाषा नहीं जानने वाले मुमुक्षु-महात्माओं के लिए साल में एक बार हिन्दी में विशेष रूप से आयोजित की जाती है। शिविर रजिस्ट्रेशन संबंधित जानकारी **Akonnect** ऐप के द्वारा दी जाएगी। जो महात्मा-मुमुक्षु इस शिविर में आना चाहते हैं, वे ट्रेन रिज़र्वेशन अवश्य करवा लें।

Form No. 4 (Rule No. 8)

Information about 'Dadavani' Hindi Magazine

1. **Place of Publication :** Simandhar City, Adalaj, Dist - Gandhinagar, Pin - 382421
2. **Periodicity of Publication :** Monthly
3. **Name of Printer :** Amba Multiprint, **Nationality :** Indian,
   Address : Opp. H B Kapadiya New High School, At- Chhatral, Tal: Kalol, Dist. Gandhinagar–382729.
4. **Name of Publisher :** Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation, **Nationality :** Indian,
   Address : Simandhar City, Adalaj, Dist - Gandhinagar, Pin - 382421
5. **Name of Editor :** Dimple Mehta, **Nationality :** Indian, **Address :** same as above. (As per No.4)
6. **Name of Owner :** Mahavideh Foundation (Trust), **Nationality :** Indian,
   Address : same as above. (As per No.4)

I, Dimple Mehta hereby declare that the above stated information is correct to my knowledge and belief.

Date : 15-03-2024

sd/-

Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation

(Signature of Publisher)

त्रिमंदिरो के संपर्क : अडालज : 9328661166-77, **राजकोट :** 9924343478, **भूज :** 9924345588, **मुंबई :** 9323528901, **अंजार :** 9924346622, **मोरबी :** 9924341188, **सुरेन्द्रनगर :** 9737048322, **अमरेली :** 9924344460, **वडोदरा :** 9574001557, **गोधरा :** 9723707738, **जामनगर :** 9924343687. **अन्य सेन्टरों के संपर्क : अहमदाबाद (दादा दर्शन) :** 9574001445, **वडोदरा (दादा मंदिर) :** 9924343335, **दिल्ली :** 9810098564, **बैंगलूर :** 9590979099, **कोलकता :** 9830080820
यु.एस.ए.-केनेडा: +1 877-505-3232, **यु.के.:** +44 330-111-3232, **ऑस्ट्रेलिया:** +61 402179706

अडालज : विवाहित बहनों की शिविर : ता. 17 से 21 जनवरी 2024

अडालज : विवाहित भाईयों की शिविर : ता. 24 से 28 जनवरी 2024

अडालज त्रिमंदिर संकुल : फूडमेला : ता. 4 फरवरी 2024

मार्च 2024
वर्ष-19 अंक-5
अखंड क्रमांक - 221

दादावाणी

Date Of Publication On 15th Of Every Month
RNI No. GUJHIN/2005/17258
Reg. No. G-GNR-348/2024-2026
Valid up to 31-12-2026
Licensed to Post Without Pre-payment
No. PMG/NG/036/2024-2026
Valid up to 31-12-2026
Posted at Adalaj Post Office
on 15th of every month.

ज्ञाता-द्रष्टा रहें, वही खुद का स्वभाव

ज्ञान और अज्ञान में भेद डाले, वही पुरुषार्थ। आप शुद्धात्मा में रहते हो, शुक्लध्यान में, वही पुरुषार्थ है। कोई आपका अपमान करे, तब तो आपको ऐसा लगता है कि यह ऐसा कर रहा है। 'वह कर रहा है', ऐसा मानते हो, वह आपके समझने में भूल है। वह भी शुद्धात्मा है और वह जो कर रहा है, वह तो सारा उदयकर्म के अधीन कर रहा है, वह खुद नहीं कर रहा। अपने-अपने उदयकर्म आमने-सामने व्यवहार पूरा कर रहे हैं। आपको देखते रहना है कि ये दोनों *पुद्गल* क्या लट्ठबाजी कर रहे हैं! और उसे जो देखता है वह पुरुषार्थ है। तब यदि आप ज्ञाता-द्रष्टा रहें, अर्थात् अंत में जो ज्ञान-अज्ञान को भिन्न रखने के बाद में अलग रहता है, वह खुद का स्वभाव है। उसके बाद स्वभाव में आ गया। ऐसा करते-करते निबेड़ा आएगा।

- दादाश्री

Printed and Published by Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation - Owner.
Printed at Amba Multiprint, Opp. H B Kapadiya New High School, Chhatral - Pratappura Road,
At - Chhatral, Tal : Kalol, Dist. Gandhinagar – 382729.